भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 21 | उदयपुर बुधवार 01 नवंबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

घड़ल्यो म्हारो लाड़लो.. स्हेर में भाग्यो जायरे भाई

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

रंगों के प्रदेश राजस्थान के रंगीले त्यौहारों में दीपमालिका का अपना महत्त्व रहा है। दीवाली के इन दीपों में जैसे जनसाधारण की मधुर मुस्कुराहट अपनी जगमगाहट और झिलमिलाहट से समस्त वसुधा को आलोकित कर रही हो अथवा गगनदेव ने अत्यंत प्रमुदित होकर धरती पर अपनी मुस्कान बिखेरी हो या लक्ष्मी रानी की साड़ी के बीच जैसे असंख्य सुनहली पक्की कोर की पंखुडिया आंखमिचौनी का खेल खेल रही हो या कि किसी दानी ने जैसे उजाले के कण बिखेर दिये हों, ऐसे ही कुछ विविध रूपों एवं रंगों में दीवाली के दीप तिल-तिल जलते, लुकछिप करते हमें दृष्टिगोचर होते हैं। कार्तिक के कृष्ण पक्ष में चार पांच दिन के लिये दीवाली पाहुन बन कर आती है और धरा को सुवासित सुगंधित एवं प्रकाशित कर हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का मार्ग बता जाती है।

हर्ष उत्साह एवं अनुपम आनन्द लिये बाल-बालिका वर्ग में एक नया जोश उमड़ आता है। दीवाली के स्वागतार्थ एक पक्ष पहले से ही दीवाली के आने की खबर अपनी-अपनी टोलियों में नन्हें-नन्हें हमजोलियों के घर-घर में गीत गा- गाकर सुनाते रहते हैं। हँसते-खेलते, कूदते एवं नाचते हैं। बालकों में इस प्रकार के गाये जाने वाले गीतों को हरणी अथवा लोड़ी कहते हैं। टोली के सभी साथी स्वर-में-स्वर मिलाकर जब -

आम्बा में तो तूंबोरे
खेर्‌या में खजूरा।
लकड़दासजी कागज मेल्यो
लिंबाड़े हजूर। जलाजायजी की लोड़ी!
आंबो वद्‌यो भाई लाम्बो रे
डालगई गुजरात!
डाले लागी केर्‌यां रे
खाईग्यो बदरीनाथ!
जलाजायजी की लोड़ी!
बदरीनाथ रा कोट कांगरा रे
चित्तौड्‌यो कुम्हार
चीतो आयो सांकड़े रे
नार धड्‌का ले! जलाजायजी की लोड़ी।

यह गीत गाते हैं तो लगता है गीतों के बोल स्वयं रसीले रसिये बनकर छैल-छबीली दीवाली की आरती उतारने पर उतारू हो रहे हैं। इन पंक्तियों से दीवाली का इतना घनिष्ट सम्बन्ध नहीं होते भी हुए इनकी अपनी शैली, इनके अपने मान एवं इनकी अपनी आत्मा है-

मक्की माता घणी पाकी रे
घट्‌टी घमोड़ा खाय!
पीसना वाली पातली रे
नतरा सोठा खाय। जलाजायजी...
खेता खेड़े वणो वायो रे
मनकी नींदवा जाय
म्हारो बेटो ऊंदरो रे
दानगी देवा जाय! जला जायजी....

कपास बोकर बिल्ली द्वारा नींदना (खेत की सफाई करना) और चूहे द्वारा दानगी (मजदूरी) देने की कितनी सुन्दर कल्पना की गई है। बिल्ली और चूहों के इस प्रकार के आपसी स्नेह, सहायता और बन्धुता से हमें यही सबक मिलता है कि जब इन पशुओं में भी इतनी घनिष्टता एवं भाईचारे का व्यवहार है तो फिर हम सभी मानव कहाने वाले, कन्धों से कन्धा मिलाकर दीवाली के इस पुनीत यश में क्यों न हाथ बंटायें!

अत्यन्त दुबली-पतली हरणी को देखकर जब उससे यह प्रश्न किया गया कि बहिन हरणी तू इतनी दुबली क्यों हो गई हो? यदि तुम्हारा कोई सहारा नहीं है तो तुम मेरे मामे के घर चलो। वहां तुम्हें मैं अच्छे कट्‌ठे गेंहू की बनी घूघरी खिलाऊँगा। बस यही बात गीत बन गई और न जाने कब से, जब-जब दीवाली आती है बालक-बालिकाओं के कंठों से स्वत: ही अपनी मधुर राग में निकल पड़ती है -

हरणी हरणी तू क्यूं दूबली ए चाल म्हारे देस
मामे रांधी घुघरी धोली तली को तैल
धीरे धीरे केबड़ो रे
क्यारे क्यारे फूल! जलाजायजी....
ऊंडी कंडी बावड़ी रे
मांय भंवर की बेल
पाणी वाली पातली रे
चेवड़ो ढीलो मेल! जलाजायजी...

दीवाली के दिन दीवाली के स्वागतार्थ लड़के अपने हाथों में माटी की बनी हीड़ लेकर घर-घर में हीड़ हींचने जाते हैं। इस हीड़ में एक मिट्‌टी का दीप जलता रहता है।

हीड़ हींचो! पया मेलो
तेल पूरो
गायां रे घूघरा
भैंस्यां रे रमझोला!
आज दीवाली काले खेंखरो।

हीड़ गीत गाकर वे पैसे एकत्रित करने रहते हैं। अन्य दिनों की तरह दीवाली के दिन वे जौ, ज्वार आदि न लेकर केवल पैसे ही लेते हैं। साथ ही साथ दीवाली का त्यौहार, जिसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी, आ गया है तथा दूसरे दिन खेंकरा (रामारामी अथवा गोवर्द्धन पूजा का दिन) है। इस बात की सूचना भी वे देते रहते हैं। दीवाली के दूसरे दिन भोर में भी-

साइलो माइलो सरी राम को रे
टिकल्यो हणुमान
लंका लंका जाई जो रे
देवता का असवार

तथा 'आम्बा में तो तूम्बो रे' गीत गाकर दीवाली समाप्ति समारोह मनाते हैं। बालकों की तरह बालिकाओं में भी उतना ही बल्कि उससे ही ज्यादा उत्साह रहता है। वे भी समूह रूप में दीवाली के गीत गाती हुई घर-घर दीवाली का सन्देश सुनाती हैं। बालिकाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों को घड़ल्या नाम से सम्बोधित करते हैं।

घड़ल्या रे घड़ल्या कठे चाल्यो
चाल्यो ए बाई पीली रे खाने
खोदी खोदी नु गुणा में नाकी
लींपी चूंपी ने चाकर चणायो

बालिकाएं प्राय: अपने घरों की सफाई लींपापोती हेतु सुबह बहुत जल्दी अथवा संध्या को भोजन करने के बाद अपने सिर पर टोकरियां ले-लेकर पीली लाने के लिए खानों पर जाती हैं। घड़ल्या नामक कुम्हार का लड़का भी एक दिन जब अपने गधे को साथ लिए पीली लेने जा रहा था तब रास्ते में एक लड़की के पूछने पर उसने बताया कि पीली लाकर मैं भी अपने घर को स्वच्छ, साफ़-सुथरा बना दीवाली का त्यौहार मनाऊँगा।

वह घड़ल्या सभी लड़कियों के लिए अजीब खिलौना एवं हँसी मजाक का विषय बन गया। आज तक लड़कियों ने घड़ल्या जैसा अजीब नाम कभी सुना नहीं था। धीरे-धीरे यही गीत दीवाली के गीतों के साथ लड़कियों ने गाना प्रारम्भ कर दिया। शनै: शनै: दूसरे गीत तो प्राय: लुप्त से होते गये और यह घड़ल्या ही गीत बन कर आज तक सभी के कलकण्ठों में गूंजता रहा।

लड़कियां गीत गाते समय अपने साथ एक मिट्‌टी का घड़ा ले जाती है जिसके चारों ओर छोटे-छोटे छिद्र होते हैं और जिसमें एक नन्हा सा दीपक जलता रहता है, उस घड़े को भी कालान्तर में घड़ल्या ही कहा जाने लग गया ।

पोल में जब लड़कियां घड़ल्या गीत गाती हैं तो आसपास की सभी औरतें, एकत्रित हो गई। उन लड़कियों के हाथों में इस प्रकार की अनेक छिद्रों वाली मटकी देखकर वे आश्चर्यान्वित हो गई और उनमें से एक घड़ल्ये का मोल पूछ बैठी। लड़कियां गीत में ही उसका उत्तर देती हैं-

रमझम करती वण्यारी आई
के वे वण्यारी घड़ल्या को मोल
सात सुपारी रूपयो रोक
दाव पड़े तो दे बाई
नीतर उतर दे बाई

केवल सात सुपारी और एक रुपया हमारे घड़ल्ये की कीमत है बहिन! यदि तुम्हें ठीक जँचे तो तुम इसे मोल ले सकती हो नहीं तो हां ना का उत्तर तो दो। इससे किसी प्रकार का उत्तर न पाकर केवल-

थारो बेटो परण पधारे
लाख रीपा की लाड़ी लावे
लाड़ी करे सिणगारो
घड़ल्यो म्हारो लाड़लो

कह कर अपनी शुभकामनायें व्यक्त करती हुई आगे बढ़ती हैं क्योंकि उन्हें तो उस बहिन को जितनी प्यारी लाख रुपये तक खर्च करने पर उसकी पुत्र-वधू होगी, उससे भी ज्यादा बहुत ज्यादा, अपना घड़ल्या प्रिय है। एक अन्य गीत में लड़कियां अपने पिता से 'बड़े घर परणावो जी' कह कर अपनी आंतरिक अभिलाषा जिस खूबी से व्यक्त करती है वह सुनते ही बनती है-

गाड़ी नीचे चमला बाया,
ऊगा छोटा मोटा जी!
बाप म्हारा बावजी!
बड़े घर परणावोजी।
बड़ा घरां का ताकड़ी तोला,
सेर सोनो तोलांजी !
सेर सोना की म्हारे आयल पायल
रूपा का झांझरियाजी!
ओढ़ पेर ने पाणी चालाँ,
राणीजी बखाणेजी।
रावजी रा घड़ल्या छूटा,
ठमके पायल टूटीजी!
लादी व्है तो दीजो देवर,
म्हूँ थाणी भोजाईजी!
लोड्‌यो देवर पीसे पोवे,
जेठ भरेगा पाणीजी।

बड़े घर में जाने पर सोने के समस्त आभूषणों से सारा शरीर ही जैसे सोना बन जायगा। अच्छे ओढ़ पहिन कर जब पानी लेने पनघट पर जाऊँगी तो राणीजी मुझे बखानेगी। मैं खूब खेलूँगी, कूद-फाँद करूँगी और इस कूदफाँद में जब मेरी पायल टूट जायगी तो देवरजी से कहूँगी कि देवरजी मैं तो आपकी भौजाई हूँ, यदि मेरी पायल आपको मिली है तो मुझे दे दीजिये। मेरा छोटा देवर वक्त बेवक्त पीसने तथा रोटी बनाने में मेरी मदद करेगा और जेठजी कभी-कभी पानी की मटकी भर ले आयेंगे। नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं की इस प्रकार की सुखी परिवारिक जीवन की कल्पना कितनी स्वाभाविक प्रशंसनीय एवं सराहनीय है।

एक दीवाली जबकि लड़कियां घड़ल्या गीत गा रही थी, एक जरा से आपसी वैमनस्य के कारण एक अन्य लड़की उसके हाथ से वह घड़ल्या छीनकर भाग गई। रास्ते में उसके पांव में कांटा चुभ गया। बात बढ़ गयी। कांटा बुरी तरह दर्द करने लग गया तब ताई के वहाँ कांटा निकालवाने गई। देवजी ने संतोष एवं धीरज के साथ उसे पान फूल खाने को दिये। देवजी से कांटा निकलवाकर जब वह घर जा रही थी तो रास्ते में मगरी का पुत्र जो स्वभाव से ही चंचल था, मिल गया और उसके हाथ से पान फूल छीनकर खा गया। यह शिकायत लेकर जब वह मगरी के पास गई तो मगरी को अत्यंत गुस्सा आया और उसके जोर-जोर से सात लातें लगाई। मगरी का बेटा बिचारा गुड़िन्दे खाता खाता अपने होश हवाश ही भूल गया ।

कुछ दिन बाद घड़ल्या गाने वाली सातों सहेलियों की शादी हो गई। सभी अपने अपने ससुराल चली गई। बहुत समय बाद जब वे पुन: दीवाली के त्यौहार पर मिलीं तो उनमें से एक ने अपनी सहेली की साड़ी के पल्लू में छोटी सी चूहिया बांध दी। बिचारी चूहिया जोर से चिल्लाने लगी और उसकी साथिनों ने अपने-अपने हाथों में मूसले लेकर उसके साथ हंसी मजाक करना प्रारंभ कर दिया। एक अजीब तमाशा सा हो गया। बात बहुत बढ़ गई। बढ़ती-बढ़ती उसकी ससुराल तक जा पहुंची जिसने चूहिया बाँधी थी। घर जाने पर सास ने उसे बहुत डाँट फटकार सुनाई और पति ने उसे खूब पीटा तथा मकान की देहली तक घसीट लाकर जोर से पटका मारा।

पत्नी नाराज हो गई और 'एलो थांरा छोरा छोरी' कहकर अपने पीहर की ओर चलती बनी। पति से रहा न गया। वह उसे ढूंढ़ने निकला और पास ही के एक गांव में जा निकला। गांव के चौराहे पर बैठे ग्राम पटेल से उसने पूछा कि पटेल भाई तुमने इधर जाती हुई मेरी गोरड़ी को देखा क्या? पटेल के पूछने पर कि तुम्हारी गोरड़ी कैसी थी? कैसा उसका रंग- रूप था, उसने बताया कि लांबीसी, कुछ पतली सी मेरी गोरड़ी है और हाथ में लाख का लाल चूड़ला पहने है। पटेल ने उसे संतोष बंधाने के लिए उत्तर देते हुए कहा- हां भाई तुम्हारी गोरड़ी मैंने देखी है। पास ही जो वट वृक्ष है उसकी खोखल में बैठी वह विश्राम कर रही है।

घड़ल्यो म्हारो लाड़लो!
स्हेर में भाग्यो जायरे भाई!
स्हेर में लागो कांटलो
ताई के घरे जाय रे भाई!
ताई दीधी नीसणी
देवजी के घर जाय रे भाई!
देवजी दीधा पान फूल
मगरी बेटो खायरे भाई
मगरी दीधी लात की
सात गुड़िन्दा खायरे भाई!
सातां मेली गोरड़ी
सातां रे राता पागारे भाई
पल्ले बांधी ऊंदरी
स्यूं स्यूं करती जायरे भाई
हाथे बांध्यो मूसलो
धम धम करतो जायरे भाई!
लूंमा केरी लाकड़ी ने
घणी घणी कूटी ओ राज
कूटी तो थोड़ी ने खेंची गणी
डेरी में लाई डचोकी ओ राज
एलो थारा छोरा छोरी
म्हें म्हारे पीहर जास्यां ओ राज
गाम पटेलां भाईला म्हारो
गोरी ने जाता देखी ओ राज
कसी थारी गोरड़ी ने
कस्यो गोरी को रूप ओ राज
लांबी गोरी पातळी ने
हाथ गलाल्यो चूड़लो राज
देखी थी भाई देखी थी
बड़ला की खोखल देखी थी।

इस प्रकार किशोर-किशोरियों में दीवाली नई उमंग, नया जोश एवं नया जीवन लेकर आती है। उनके साथ नाचती गाती, हंसती खेलती एवं सोती-जागती है और कुछ समय तक रहकर पुन: गायब हो जाती है। बच्चे स्वाति की तरह टकटकी लगाये देखते रह जाते हैं कि कब दीवाली आई और पुन: कैसे कब एवं किस रास्ते से नो दौ हो गई।

दीवलों से दीपित हो रात माण्डणों से मुदित परभात

- डॉ. कहानी भानावत -

त्यौहारों में दीवाली और गणगौर त्यौहार ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण त्यौहार माने गये हैं। ये दोनों अकेले त्यौहार नहीं हैं, इन दोनों और इनके रिध-सिध दो-दो त्यौहार लगे हुए हैं। जैसे लोकदेवताओं की प्रतिमाओं में माताजी के साथ कालाजी-गोराजी थरपित किये होते हैं। इसलिए इन त्यौहारों का व्यष्टि-समष्टिव्यापी मूलाधरी महत्त्व है।

होली से शुरू हुआ गणगौर धींगा गणगौर तक गणगौराता हुआ सौभाग्य सुध दे जाता है तो इधर दशहरा से प्रारम्भ हुई दीवाली भी ल्होड़ी दीवाली तक दीपित हो जनजीवन को दीप्त-प्रदीप्त होने का सुख सम्बल प्रदान करती है।

माटी के पुतले मनुष्य की माटी का दीया क्या दे सकता है? छोटा-सा दीपक और छोटा-सा मनुष्य कहीं खोटा नहीं है। दीपक में ज्योति है तो मनुष्य में भी है। दीपक में किरण है तो मनुष्य में भी है। दीपक में स्नेह है, ममत्व है, समत्व है, अपनत्व है, मनुष्य में भी यह सब कुछ है फिर यह सब कुछ लपेटा लिया मनुष्य जोत से मौत क्यों हो जाता है? अकेला दीया कितना बड़ा हिया रखता है। उसे कहीं छोड़ दो। तलवे में चाहें मलवे में। रोजमर्रा पर चाहे जरा मार्ग पर वह प्रकाश की कटौती से अन्धकार से अन्धकार को चीरता नजर आयेगा। उसके पास देने को कुछ नहीं है। वह तो जल रहा है और जल जल कर अन्धकार को केशरिया कुंकमी परिधान दे रहा है।

यह छोटा-सा दीपक अकेला है मगर जब चाहता है जोत से जोत खड़ी कर आकाश-पाताल तक रोशन राह खड़ी कर देता है। श्राद्धपक्ष में आये पितरों को यही तो राह बताकर उन्हें यथास्थान पहुंचाता है। दीपक का अस्तित्व उसकी जोत है। यही जोत मनुष्य का अस्तित्व भी है मगर मनुष्य का स्नेह जब सूख जाता है तब उसकी लौ बुझ जाती है और वह बुझदिल हो जाता है। मोती का पानी उसकी कांति है। दीप का पानी उसकी स्नेह जोत और मनुष्य का पानी उसकी मर्दानी जवानी है। इन्हें किसी का आवरण नहीं चाहिये। आवरण तो अन्धेरा है। अन्धेरा घेरा है जो स्वयं बन्दी बन जाता है। ज्योति कभी बंधती नहीं है, विकीर्ण होती है। फैलती है। जो फैलती है वह फलती है। दीया स्वयं नहीं फैल कर अपनी जोत को फैलाता है मगर मनुष्य अपनी जोत को कैद कर फैल जाता है और यहीं आकर उसकी मृत्यु हो जाती है।

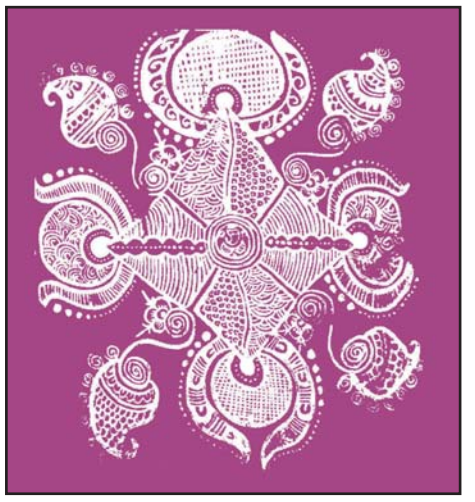

जो मनुष्य ज्योति को माण्डता है, वह परम ज्योति को प्राप्त होता है। ज्योति को माण्डने वाला मनुष्य अपने आंगन तक को माण्डता था। कितने विविध माण्डणें! कितने चौक, सातिये, पगलिये, दीये, हीड़ और तरह-तरह के पकवानों का आकार-प्रकार लिए माण्डणें! कोई कोना, आंगन, देहली और कहीं कुंवारा न रह जाए। सब तरफ तरह-तरह के माण्डणें जैसे हीरे, पन्ने, माणक और मोती, लाल बिखरे जड़े हों। कितना बेशकीमती आंगन। कहीं रिक्तता नहीं। विविध रंगों में सजा-संवरा आंगन रूप, साज और सिणगार देता है हमारे जीवन को। चार खूंट चारों दिशाएं। यह अकेला आंगन पूरी सृष्टि है। चांद-सूरज, ग्रह-नक्षत्र सब के सब इस आंगन में आ समाए हैं। माण्डणों को पूरने वाले भरण, भीरण, वेल, भंवर, आंकड़-वांकड़ तथा तोड़-मरोड़ सृष्टि के दार्शनिक बिन्दु-सिन्धु हैं। मनुष्य इस आंगन का अंगजीवी है। शक्तिरूपा नारी इसका मूल है जो अपने करों से अपने पगल्यों तक को पायल देती हुई शाश्वत संगीत की सृष्टि करती है।

दीपक घर में है। दीपक बाहर है। दीपक देहरी पर है। कोटे-परकोटे पर है। दीपक परेंडें पर है। आलिये में है। स्नानगृह और शैय्यागृह में है। दीपक राह पर है, चौराहे पर है। दीपक छाजे पर है, बाजे पर है। तलाश लक्ष्मी की है। प्रकाश सरस्वती का है। घर लिछमियां थाली में पूरी सज रही हैं। इस प्रकाश पुत्री को। थाली थामे यह लक्ष्मी कितनी दिव्य लग रही है। इस दीप-सरसती को यह सब ओर छोड़ रही है मगर जब मैं पूछता हूं कि क्या तुम धन लक्ष्मी को भी इसी तरह फैला सकती हो। तो वह मधुरे-मधुरे मुस्कुरा पड़ती है और पूरी रात दीपक को तैलती हुई लिछमी के साकार में हाग-सुहाग बनी रहती है।

होली और दीवाली, ये दो ऐसे फसली त्यौहार हैं जो हर वर्ग का प्रतिनिधित्व लिये अपने में कई सन्दर्भ-सूत्र पिरोये हैं। जैसे होली के साथ गणगौर त्यौहार जुड़ा हुआ है वैसे ही दीवाली त्यौहार के साथ दशहरा जुड़ा हुआ है। फसल की पकाई पर ये दोनों ही त्यौहार बड़े जोश खरोश के साथ मनाये जाते हैं। होली पर जहां आग, राग, रंग और फाग की प्रधानता देखी जाती है वहां दीवाली पर सब तरफ प्रकाश ही प्रकाश विकीर्ण हुआ दिखाई देता है।

दीवाली के इन दीपों में जैसे जनसाधारण की मधुर मुस्कुराहट अपनी जगमगाहट और झिलमिलाहट से समस्त वसुधा को आलोकित कर रही हो अथवा गगनदेव ने अत्यंत प्रमुदित होकर धरती पर अपनी मुस्कान बिखेरी हो या लक्ष्मी रानी की साड़ी के बीच जैसे असंख्य सुनहली पक्की कोर की पंखुड़ियां आंखमिचौनी खेल रही हो या कि किसी दानी ने जैसे उजाले के कण बिखेर दिये हों; ऐसे ही कुछ विविध रूपों एवं रंगों में दीवाली के दीप तिल-तिल जलते, लुकछिप करते हमें दृष्टिगोचर होते हैं। कार्तिक के कृष्ण पक्ष में चार-पांच दिन के लिए दीवाली पाहुन बनकर आती है और धरा को सुवासित-सुगंधित एवं प्रकाशित कर हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का मार्ग बता जाती है।

दीपदान की व्यापक परम्पराएं :

हमारे यहां कार्तिक के इस माह में दीपदान करने की परम्परा भी अति प्राचीनकाल से रही है। स्कंद पुराण तथा पद्म पुराण में इस माह में घी अथवा तेल के दीपक जलाने वाला अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख है। पुराणों में दुर्गम भूमि पर दीपदान करने का विधान भी मिलता है।

इसी माह में लड़कियां-महिलाएं काति नहाकर अन्त में जलाशय के किनारे पानी में दीपक छोड़ती हैं। मानव जीवन में विभिन्न संस्कारों पर दीपदान की बड़ी समृद्ध परम्परा आज भी है। विवाह पर तोरण आए दूल्हे की दीपों से अरती उतारी जाती है। मृत व्यक्ति के स्थान पर तेरह दिन तक दीपक जलाकर उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है।

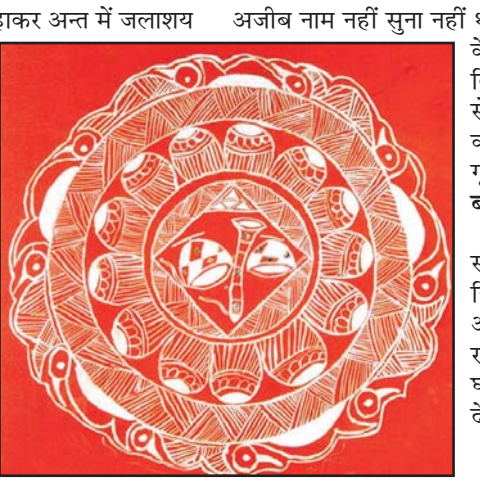

प्रत्येक देवी-देवता का आह्वान भी दीपक जलाकर ही किया जाता है। दीपक जलाकर रात जगाई जाती है। लक्ष्मी का आह्वान भी दीपक जलाकर ही किया जाता है। गजदीप नाम से राजस्थान में दीपदान की एक परम्परा रही है। किसी अपिरिचत के पथ को आलोकिक करने के अभिप्राय से आकाशदीप और पंछीदीप प्रज्वलित किया जाता है।

कार्तिक की अमावस्या की दीवाली के दीपों के साथ-साथ व्याघ्र, वृषभ, गरूड़, गुरु तथा वृक्ष दीपदान किया जाता है। इसी माह बलि ने विष्णु का दीपदान किया तो वह सारे कष्टों से मुक्त हो स्वर्ग सिधार गया। मंदिरों में जहां वृक्ष न हो वहां काठ का प्रतीक वृक्ष बनाकर जलाया जाता है। मयूर की आकृति का दीपदान करने की परम्परा कश्मीर में पाई जाती है। उड़ीसा बंगाल की जनजातियों में तो एक-दूसरे के गले मिलते हुए सामूहिक नृत्यावस्था में प्रत्येक घर में दीप देने की परंपरा है। कितना महत्व, कितनी ममता-समता और कितना माहात्म्य है इन दीपों का!!

आदिवासियों तथा काश्तकारों में दीवाली का प्रारंभ खेत-देव खेतरपाल की पूजा से होता है। खेतरपाल के रूप में एक पतरे पर सिन्दूर लगा नींबू काट नारियल की धूप दे दी जाती है। रात को वहां दीपक कर दिया जाता है।

चवदस को नमक, मिर्च, राई, फटे पुराने चीथड़े आदि सात प्रकार की चीजों को मिलाकर एक मटकी में डाल दी जाती है। यह मटकी गाजे-बाजे के साथ चौराहे पर छोड़ दी जाती है। विश्वास है कि ऐसा करने से भूत, प्रेत आदि के चक्कर से तो उन्हें मुक्ति मिलती ही है साथ ही वर्ष भर ही समग्र प्रकार की अलाय बलाय से भी वे बचे रहते हैं।

घुड़ला-घुड़ेलखां और घड़ल्या :

दशरावे से ही लड़कियां दीवाली के स्वागत में रात्रि को प्रत्येक घर-गली में घुड़ला फिराना प्रारंभ कर देती हैं। यह घुड़ला छेदवाली मटकी होती है जो दीपक लिये होती है। इसके चारों ओर के छेदों से भीतर रखे हुए दीये का प्रकाश बड़ा मधुर-मधुर टिमटिमाता हुआ परिलक्षित होता है।

लड़कियां समूह रूप में इस घुड़ले को सिर पर लिये गीतों के साथ नाचती रहती हैं। गृहस्वामिनियां इस घुड़ले को तेल पूरती हैं और पैसे देती हैं। यह घुड़ला भी हमारे लोकजीवन का ऐतिहासिक प्रवाद बन गया है।

यह घुड़ला सिंध का मीर था जिसका नाम घुड़ेल खां था। प्रसिद्धि है कि संवत् 1548 में इसने मारवाड़ के पीपाड़ नामक गांव पर हमला कर वहां की बहुत सारी लड़कियों को पकड़ ले गया। तब मल्लूखां नामक अजमेर का सूबेदार था। उसने अपने सैनिकों के साथ घुड़ेलखां पर हमला कर तीरों से उसका सिर छेद डाला और अपहरण की हुई बालिकाओं को मुक्त कर उन्हें घुड़ेलखां का तीरों से छिन्नभिन्न किया सिर भी भेंट किया। यही सिर मटकी के प्रतीक रूप में लड़कियां अपने सिर पर लिये नाचती हैं। घुड़ेलखां का प्रतीक यह घुड़ला असत है और इसमें प्रज्वलित दीप सत है। यह दीपोत्सव असत पर सत की विजय का हास-उल्लास है।

मारवाड़ का यह घुड़ला मेवाड़ में घड़ल्या बन नाचा गाया जाने लगा। यहां घड़ल्या बड़ा लाड़ला बन सबके परिवार में सेंतमेंत हो गया। यहां इसकी कीमत सात सुपारी और एक रूपया है। गीतों में घड़ल्या लड़कियों को उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय किसी महिला के लिये सजी सिणगारी पुत्र-वधू होती है।

रमझम करती बण्यारी आई
के वे बण्यारी घड़ल्या को मोल
सात सुपारी रिपियो रोक
दा पड़ै तो ले बाई, नीतर उत्तर दे बाई
थारो बेटो परण पधार्‌यो
लाख रिप्या री लाड़ी लायो
लाड़ी करै सिणगारो, घड़ल्यो मारो लाड़लो।

बालक-बालिकाएं समूह रूप में दीवाली के गीत गाती हुई घर-घर दीवाली का संदेश सुनाती हैं। बालिकाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों को घड़ल्यो नाम से संबोधित करते हैं। इधर मेवाड़ में घड़ल्ये से संबंधित अन्य धारणा और मिथक प्रचलित हैं।

घड़ल्या रे घड़ल्या कठे चाल्यो
चाल्यो ए बाई पीली के खाने
खोदी खोदी नु गुणा में नाकी
लींपी चूंपी ने चाकर चणायो

बालिकाएं प्राय: अपने घरों की सफाई लींपापोती हेतु सुबह बहुत जल्दी अथवा संध्या को भोजन करने के बाद अपने सिर पर टोकरियां ले-लेकर पीली लाने के लिए खानों पर जाती हैं। घड़ल्या नामक कुम्हार का लड़का भी एक दिन जब अपने गधे को साथ लिये पीली लेने जा रहा था तब रास्ते में एक लड़की के पूछने पर उसने बताया कि पीली लाकर अपने घर को स्वच्छ एवं साफ सुथरा बनाऊंगा और दीवाली का त्यौहार मनाऊंगी।

वह घड़ल्या सभी लड़कियों के लिए अजीब खिलौने एवं हंसी मजाक का विषय बन गया। आज तक लड़कियों ने घड़ल्या जैसा अजीब नाम नहीं सुना नहीं था, धीरे-धीरे यही गीत दीवाली के गीतों के साथ लड़कियों ने गाना प्रारंभ कर दिया। शनै:-शनै: दूसरे गीत तो प्राय: लुप्त से होते गये और यह घड़ल्या ही गीत बन कर आज तक सभी के कलकंठों में गूंजता रहा।

बालिकाओं की मनोभावनाएं :

लड़कियां गीत गाते समय अपने साथ एक मिट्‌टी की कलशी ले जाती हैं जिसके चारों ओर छोटे-छोटे छिद्र होते हैं और जिसमें एक नन्हा सा दीपक जलता रहता है। इसी को घड़ल्या कहा जाता है। घड़ल्ये का मोल पूछने पर लड़कियां उत्तर देती हैं-

रमझम करती बण्यारी आई
के वे बण्यारी घड़ल्या को मोल
सात सुपारी रूपयो रोक
दाव पड़े तो दे बाई नीतर उत्तर दे बाई
थारो बेटो परण पधार्‌यो
लाख रीपा की लाड़ी लायो
लाड़ी करे सिणगारो घड़ल्यो म्हारो लाड़लो।

एक अन्य गीत में लड़कियां अपने पिता से 'बड़े घर परणावो जी' कह कर अपनी आंतरिक मनोभावना जिस खूबी से व्यक्त करती है, वह सुनते ही बनती है-

गाड़ा नीचे चमला बाया, ऊगा छोटा-मोटा जी
बाप म्हारा बावजी बड़े घर परणावोजी
बड़ा घरां का ताकड़ी तोला, सेर सोनो तोलांजी
सेर सोना की म्हारे आयल-पायल रूपा का झांझरियाजी
ओढ़ पेर ने पाणी चालां, राणाजी बखाणेजी।
रावजी रा घुड़ल्या छूटा, ठमके पायल टूटीजी
लादी व्है तो दीजो देवर, म्हूं थाणी भोजाईजी!
लोड़्यो देवर पीसे पोवे, जेठ भरेगा पाणीजी,

बड़े घर में ब्याहने पर सोने के समस्त आभूषणों से सारा शरीर ही जैसे सोना बन जाएगा। अच्छे ओढ़ पहिन कर जब पानी लेने पनघट पर जाऊंगी तो राणाजी मुझे बखानेंगे। खेलकूद में जब मेरी पायल टूट जायेगी तो देवरजी से पायल ढूंढ लाने को कहूंगी। छोटा देवर पीसने-पोने में मेरी मदद करेगा। जेठजी कभी-कभी पानी की

मटकी भर ले आयेंगे। नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं की इस प्रकार की सुखी पारिवारिक जीवन की कल्पना कितनी स्वाभाविक एवं सराहनीय है।

तब प्रत्येक घर से मिठाई और नारियल देकर इन हीड़ गायकों को विदाई दी जाती है। कहीं-कहीं घरों में जितने पुरुष होते हैं उतनी हीड़ें जलाई जाती हैं। छोटों की ओर से बड़ों को हीड़ देने का रिवाज भी शुभ माना गया है। कहीं-कहीं हीड़ लाये व्यक्ति को तेल का पानी पिला कर चांदी का रूपया देकर विदा किया जाता है।

स्मृतियों के शिखर (174) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लक्ष्मी के प्रतीक रूप

धन की देवी लक्ष्मी की मान्यता भारतीय लोकजीवन में कई रूपों में प्रचलित है। लक्ष्मी को प्रतीक रूपों में भी लोकमानस ने महत्व देकर उसकी अभ्यर्थना की है। लक्ष्मी अर्थ देने वाली है तो सरस्वती विद्या दात्री है। दोनों आवश्यक हैं।

महालक्ष्मीजी की शृंगारित प्रतिमा

जीवन जीने के लिए अर्थ जरूरी है पर उसकी सीमा जरूरी है। इसीलिए हमारे यहां अपरिग्रह को महत्वपूर्ण माना गया है। जीवन के लिए जितना आवश्यक है उतना संचित किया जाय, शेष का उपयोग परमार्थ के लिए किया जाय। लक्ष्मी और सरस्वती की तुला समभावी रहे पर ऐसा होता नहीं, यही कारण है कि हमारे यहां धनकुबेर भी हैं और विद्या वाचस्पति भी। अर्थाभाव से पिटते-सिकुड़ते जन भी और निरा मूर्ख नासमझ भी। यह झमेला ही है।

लक्ष्मी का एक नाम गज लक्ष्मी मिलता है। विवाहोत्सव पर घर की दीवालों पर जो चितराम कोरे जाते हैं उनमें लक्ष्मीजी के दोनों ओर हाथी सूंड उठाये या तो लक्ष्मीजी को पुष्पहार चढ़ाते मिलेंगे या फिर कलश से जल का अभिषेक करते हुए। हाथी का यह अंकन लक्ष्मी के साथ जुड़ाव के कई अर्थ-बोध का सूचक है। यों भी हाथी धरती पर सबसे अजूबा किंतु शुभ-मंगल का प्रदाता माना जाता है। लक्ष्मी के साथ उसका जुड़ाव धन की शुभ और शुभ्र परिणति का सूचक है।

लक्ष्मी की ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि देनेवाली देवी के रूप में दीपावली को सर्वत्र पूजा की जाती है। घरों की लिंपाई-पुताई कर दीवाली से पूर्व गृह-लछमियां सब ओर साफ-सफाई युक्त स्वच्छ परिवेश प्रदान करती हैं।

मान्यता है कि लक्ष्मीजी का वास ऐसे ही घरों में होता है जहां गंदगी की कोई हवा तक नहीं मिलती हो। लक्ष्मी के स्वागत में बाहर से लेकर भीतर तक प्रतीक रूप में लक्ष्मी के पगल्ये, सातिये तथा दीपक के आकर्षक मांडने मांडे जाते हैं। दीवाली पर लक्ष्मी का अंकन बनाया जाता है जो थापा कहलाता है।

इस थापे की विविध मिष्ठान्नों से पूजा की जाती है। इसी के साथ लक्ष्मी स्वरूप रूपये पैसे, गहनेगांठे तथा उस धन की भी पूजा होती है जो भंडारियों, तहखानों अथवा आल्योंगाल्यों में गाड़ रखा होता है। घी का अखंड दीपक जला दिया जाता है। थापांकन की जगह अब मोटे कागज पर चितेरों द्वारा बने पाठे मिलने लग गये हैं जो लगा दिये जाते हैं।

पूजा के समय लक्ष्मीजी से संबंधित कथा-कहानियां कही जाती हैं। एक कहानी के अनुसार एक गरीब ब्राह्मण के चारों लड़के प्रतिदिन मांगने जाते और जो कुछ मिलता, घर के चारों कोनों में अलग-अलग चूल्हों पर अपना भोजन पकाकर खाते। उसी गांव में एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या का विवाह इस ब्राह्मण के बड़े लड़के से कर दिया। वह बहू सुशील और समभावी थी। उसने चारों की एक रसोई कर वातावरण बदल दिया। सभी परम संतोषी थे।

दीवाली के दिन बहू ने पूरे घर की साफ-सफाई की। टूटे फूटे बर्तन गांववालों ने जितने भी अपने घरों से निकाले, बहू ने उनको अपने घर लाकर जमा कराये। उधर राजा की रानी का हार खो गया।

चील ने उसे लाकर उन बर्तनों में डाल दिया जो बहू के हाथ लगा। राजा ने पूरे गांव में हार खो जाने की डूंडी पिटवाई। बहू ने घर के लोगों से कहा, हार दूंगी पर शर्त रखी कि दीवाली के दिन एक भी घर में दीपक नहीं जलेगा। सबने, राजा ने भी उसकी शर्त मानी।

बहू ने एक टोकरी के नीचे दीपक जलाकर रख दिया। रात को घबराई हुई लक्ष्मी आई। बहू को किंवाड़ खोलने को कहा। बहू के किंवाड़ खोलते ही लक्ष्मी की निगाह उन टूटे-फूटे बर्तनों पर पड़ी जो सोने के हो गए। राज परिवार सहित गांव वालों ने जाना कि ब्राह्मण के घर लक्ष्मीजी टूटमान हुई हैं।

एक अन्य कथा में सूरजनारायण प्रतिदिन दुनियां को जगाकर प्रकाशित करने आते हैं। इसका पता रानादे को नहीं था कि वे कहां जाते हैं। एक दिन उसने हठ पकड़ ली तो सूरजदेव उसे भी साथ ले गए।

इसका पता पूरे जहान को लग गया। छोटी बस्ती की सारी महिलाएं जैसी थीं वैसी घरों से निकल रानादे के दर्शन करने उमड़ पड़ीं। बड़े घरों की सजधज कर देर से निकलीं तब तक रानादे सबको कुंकुम् का छींटा देकर सुहागिन रहने का वरदान दे चुकी थीं। जो देर से पहुंची वे बचाखुचा आधा-अधूरा छींटा ही ले पाईं।

परिणाम यह हुआ कि जिनके कुंकुम् का पूरा छींटा लगा वे आजीवन सुहागिन बनी रहती हैं। एक पति के निधन के बाद उनमें नाता प्रथा होने से वे दूसरा पति कर लेती हैं और आधा-दूधा छींटा लगा वे विधवा बनकर जीवन काटती हैं।

उल्लू वैसे तो अंधेरे का स्वामी और अज्ञान का प्रतीक माना जाता है किन्तु लक्ष्मी के वाहन के रूप में इसकी लोक मान्यता है। ऐसा कहा जाता है कि अज्ञानी के पास लक्ष्मी का वासा अधिक होता है कारण कि वह उसका उपयोग नहीं कर पाता। जितनी उसके पास है उसे ही पकड़े अथवा लुकाये रखता है।

वह कंजूस भी अधिक होता है। दीवाली की घनी अंधेरी रात में ऐसे ही घरों में कभी-किसी उल्लू की पहुंच हो गई जिसने गृहस्वामिनी को लक्ष्मीजी के पदार्पण का एहसास करा दिया। दीवाली की रात उल्लू-दर्शन बड़ा शुभकारी माना जाता है। लक्ष्मी को पाने वाले उसके वाहन को पाकर, दर्शनकर धन्य हो जाते हैं।

धर्माचार्य और पंडित भी दीवाली की रात को लक्ष्मी पूजा के साथ उल्लू की पूजा आवश्यक मानते हैं। इससे पूरे वर्षभर ही घर में सुख शांति के साथ-साथ समृद्धि बनी रहती है। कुछ तांत्रिकों ने मुझे बताया कि दीवाली की अंधेरी रात में उल्लू की पूजा कर शक्तियां प्राप्त की जाती हैं।

ये शक्तियां तंत्र के रूप में कार्य करती हैं। मुख्यत: मारक विद्या के रूप में इनका उपयोग किया जाता है जिसे ठीक नहीं समझा जाता। किसानों के लिए उल्लू बड़ा उपयोगी माना गया है जो रात्रि में चूहों का शिकार कर उनकी फसल बचाये रखता है। सांप तथा बाज तो दिन में ही चूहों का शिकार करने में सक्षम होते हैं। उल्लू ही रात का राजा बना रहता है।

ऐसा भी कहा जाता है कि ऋषि मुनियों ने धन के प्रति अनास्था पैदा करने के लिए लक्ष्मी के साथ उल्लू को जोड़ दिया अन्यथा प्राचीन शास्त्रों में लक्ष्मी के वाहन के रूप में उल्लू का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में कोई चार सौ वर्ष पूर्व महाराणा शंभूसिंह ने भटियानी चौहट्टे में महालक्ष्मीजी मंदिर का निर्माण करवाया। यह अपने ढंग का एकमात्र मंदिर है जहां प्रतिवर्ष धनतेरस से भाईदूज तक विशेष उत्सव मनाया जाता है।

सभी दिन दर्शनार्थियों की लंबी कतार देखने को मिलती है। महालक्ष्मी माता श्रीमाली समाज की कुलदेवी भी है। इसी समाज ने देवी की नियमित सेवा-पूजा का जिम्मा ले रखा है। दीवाली के दिन सिंह लग्न में होने वाली पूजा का विशेष महत्व होने के कारण सुबह पांच बजे से ही भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती है। एक घंटे तक कपाट बंद रहने के पश्चात हर समय देवी के दर्शन के लिए खुलाई बनी रहती है। सिंह लग्न की पूजा पूरे वर्षभर भक्तों को सुखी, समृद्धिमय रहने तथा सर्व कष्टों से मुक्ति देने वाली मानी जाती है।

लक्ष्मी के वाहन के रूप में उल्लू की मान्यता के साथ तो किसी ने छेड़छाड़ नहीं की किंतु कवियों, साहित्यकारों, बुद्धिजनों और चित्रकारों ने अपने-अपने अंदाज में उल्लू को चुप नहीं रहने दिया अत: उल्लू मानव-जीवन-दर्शन में कहावत-मुहावरों में भी प्रयुक्त होता रहा। किसी को बेवकूफ अथवा मूर्ख बनाने के लिए उल्लू का प्रयोग आम बात हो गई।

लक्ष्मीजी का पाठा

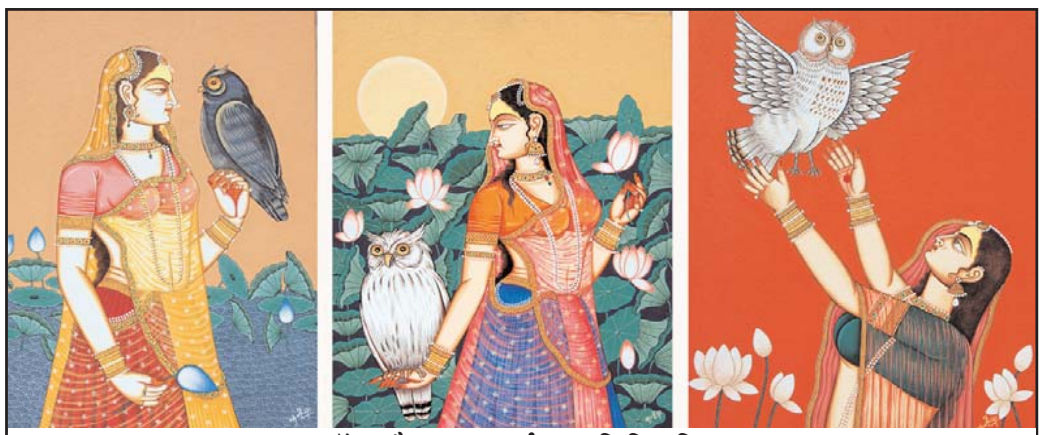

डॉ. कन्हैयालाल वर्मा द्वारा चित्रित चित्र

डॉ. कन्हैयालाल वर्मा राजस्थान के उन ख्यात चित्रकारों में थे जिन्होंने अपनी चित्रकला की विशिष्ट शैली से पहचान बनाई। उन्होंने प्रारंभ में राजस्थान के पौराणिक तथा लोक प्रचलित आख्यानों पर अनेक चित्र बनाये। ढोलामारू के चित्र से उनकी विशिष्ट पहचान बनी तदनन्तर बिहारी तथा सूर्यमल्ल मिश्रण रचित सतसई काव्य पर चित्र फलक दिये।

कालिदास के बहुप्रसिद्ध काव्य मेघदूत पर उन्होंने कई श्रृंखलाबद्ध चित्र बनाये जो 'मेघदूत चित्रण' नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए। अपनी चित्रकला के खजाने में उन्होंने राजस्थान की पारंपरिक चित्रशैली में राजपूत, पहाड़ी तथा मुगल शैली का स्पर्श देते हुए अपने निजत्व में अनेक नव्य-भव्य कल्पनाओं का अद्भुत रूपांकन दिया जो इनके चित्रों की पहचान ही बन गई।

डॉ. वर्मा वर्षों से हर दीवाली पर मुझे नया चित्र भेजते रहे। एक दीवाली पर उन्होंने मुझे लक्ष्मीजी का चित्र भेजा जिनके हाथ में उल्लू शोभित है। जब मैंने उनसे पूछा कि लक्ष्मी के साथ उल्लू का क्या संबंध है तो उन्होंने एक मजेदार घटना का उल्लेख करते हुए लिखा कि अक्टूबर 2014 में जयपुर के बालभवन में कुछ विद्यार्थियों ने डॉ. मधु पंत से सवाल किया कि यदि उल्लू को चश्मा पहना दिया जाय तो क्या वह दिन में देख सकेगा? सवाल और भी कई थे पर वर्माजी के मन-मस्तिष्क में यही सवाल कौंध गया। कुछ समय पश्चात बालभवन में उन्होंने पक्षी चित्रण सीखने वाले विद्यार्थियों को उल्लू बनाना सिखाया। वहां से लौटकर बालभवन की निदेशक श्रीमती चरणजीतसिंह ढिल्लों को फोन पर बताया कि विद्यार्थियों को मैंने उल्लू बनाना तो सिखाया पर संतोष नहीं हो रहा है अत: उल्लू पर अध्ययन कर मैं स्वयं एक चित्र बनाऊंगा। उन्होंने यही किया।

उल्लू का चित्र जब निदेशक चरणजीत को मिला तो उसे देखते ही वह उछल पड़ी और वर्माजी से बोली- ओ हो, हमारे पास तो सांभर से बनाबनाया उल्लू ही आ गया। अब तो उल्लू वर्माजी के मस्तिष्क में गहराई से उतर चुका था। थोड़े ही समय में उन्होंने तीन चित्रों की सर्जना की।

पहले चित्र में एक महिला सरोवर के किनारे टहल रही है। सूर्योदय के समय पानी से लबालब सरोवर में कमल खिले शोभित हैं। अपने हाथ पर बैठे सफेद रंग के उल्लू को महिला बड़े ही स्नेह से निहार रही है। दूसरे चित्र में एक अन्य महिला अपने बांये हाथ की उंगलियों पर काले रंग के उल्लू को निहार रही है और तीसरे चित्र में आकाश से उड़ता उल्लू धरती पर उतर रहा है जिसे एक महिला अपने दोनों हाथ ऊपर कर उसे अपने पास बुला रही है। यह उल्लू श्वेत रंगी है।

इन चित्रों की सूचना जब डॉ. वर्मा ने मुझे दी तो मैंने कहा कि आपके इन चित्रों की लक्ष्मी ग्रामीण महिला है जो समग्र भारतीय लोक चिंतना का प्रतिनिधित्व लिए है। श्वेत रंगी उल्लू वाली महिला महाशुभ्रा, महापवित्रा, महाश्वेता तथा महाशुद्धा है। यह भारतीय संस्कृति और संस्कारों का सर्वथा निश्छल प्रतिरूप है।

काले रंग की उल्लू वाली लक्ष्मी कलयुगी लक्ष्मी है जो ब्लेकमनी, ब्लेक मार्केटिंग और ब्लेकमेल की संस्तुति लिए है। यह लक्ष्मी हमारी अपनी नहीं है। दूषित, प्रदूषित एवं विदूषित है। इसे पाकर कोई भी स्वस्थ-सुखद एवं सुकर्मी-सुधर्मी नहीं हो सकता इसलिए तीसरी लक्ष्मी ही सर्वतो भावेन, सर्व लोकोपयोगी और सर्व कल्याणकारी है।

डॉ. धींग को श्रुतसेवा सम्मान

चेन्नई (ह. सं.)। शसुन जैन महाविद्यालय में जैनविद्या विभाग के शोध-प्रमुख साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का 'शांतिदेवी गुप्त श्रुतसेवा अलंकरण सम्मान' के लिए चयन किया गया है। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान श्रुतसेवा निधि न्यास, फिरोजाबाद (उ.प्र.) द्वारा 4 फरवरी 2024 को होने वाले न्यास के वार्षिक समारोह 'अक्षराभिषेक उत्सव' में उन्हें शाल, माला, प्रतीकचिन्ह, प्रशस्ति-पत्र, साहित्य और 25 हजार के मानधन के साथ सम्मानित किया जाएगा।

एडवोकेट अनूपचंद जैन ने बताया कि डॉ. धींग को यह सम्मान जैनविद्या, प्राच्यविद्या व अहिंसा के क्षेत्र में उनके सतत, सुदीर्घ व उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाएगा। अध्यक्ष मुकेशकुमार जैन ने बताया कि न्यास की स्थापना प्रसिद्ध विद्वान प्राचार्य नरेंद्रप्रकाश जैन ने की थी। - **अमितकुमार जैन 'राजा'**

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 नवंबर 2023

सम्पादकीय

दीवाली और उससे जुड़े त्यौहार

यह दीवाली अकेली नहीं है। इसके ओरूंदोरूं धनतेरस, रूप चवदस, खेंकरा, रामासामा अथवा ल्होड़ी दीवाली जैसे त्यौहार जहां दीवाली को रिद्ध सम्पन्न पुष्ट करते हैं, वहां गृह-लिछमी और पशु-लिछमी के माहात्म्य को भी प्रकटित करते हैं। कितना वैज्ञानिक और लोकमत का व्यवस्थित आलोड़न-विलोड़न है इन त्यौहारों में! वर्षा ऋतु की भिंजाई से सारा जीवन पचपचा हो जाता है। सारा वातावरण संदवाया सा हो जाता है। खाद्यानों कपड़ों-लत्तों तथा गृह-दीवारों पर नानाप्रकार के जीवधारी लग जाते हैं। इसलिए घर के प्रत्येक द्वार, दीवाल, खूंट, आंगन, छज्जे की देखभाल तथा सफाई सुथराई आवश्यक हो जाती है। इसलिए घर लीपे-पुते जाते हैं और देखते ही देखते नानाप्रकार के मांडनें मुलका पड़ते हैं।

धनतेरस को धन-लिछमी का आगमन होता है। घर-घर में। मारवाड़ में ग्रामवधुएं धोरों की धवल रेत अपनी थालियों में भर-भर द्वार के सामने बिछा देती हैं ताकि रात को लिछमीजी जब पदापर्ण करें तो उन्हें कठोर धरती का कष्ट नहीं पहुंचे। वे होले-होले आयें और उनके पावन परस से रेत का प्रत्येक कण स्वर्ण बन जाए। रूप चवदस को सूर्योदय से पूर्व ही महिलाएं सिणगारित हों अपने बड़ों से पुत्रवती होने का आशीष मांगती हैं। इस समय नारियों के कौरकिनारीदार वस्त्रों तथा आभूषणों की छमछमाहट से सारा वातावरण ही छम्मक-छुम्मक हो उठता है। घर की लछमियां तो ये ही हैं। बड़े-बूढ़े इन्हीं बहुओं को आशीर्वाद देकर इन्हीं लिछमियों से साक्षात् लक्ष्मी पाते हैं। बहू ही घर की चानणी है। मंगल मांगल्य है। रिद्धि है, सिद्धि है। रूप और रूपांकन है। रंग और रास है। पुत्र-पुत्री से आंगन कुंवारा नहीं रहने की उम्मीद आश है।

दीवाली आती है घने अंधकार में। इस घने अंधेरे में एक छोटे से दीपक की क्या बिसात ! पर वह जलता है मधुरे-मधुरे और दीप्त-प्रदीप हो उठता है। इस दीपक का जलना किसी को फूंक देना अथवा मटियामेट कर देना नहीं होता। यह तो स्नेह उड़ेलता है और इस स्नेह उड़ेलने के कारण एक से दूसरा और दूसरे से तीसरा ; इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। दीप से दीप जलने का, प्रकाशित होने का। एक परिवार का दीपक समस्त समाज, देश और देशान्तर को दीपित करता है। घना अंधेरा ज्योतिर्मय प्रकाश के रूप में फूट पड़ता है। तब लगता है जैसे धरा का प्रत्येक अंग-प्रत्यंग पीत प्रकाश से केशरिया गया है।

कितना आश उल्लास और उजास है इस त्यौहार में! अंधकार अज्ञान पर प्रकाश! ज्ञान का यह कमल-दीप हमारे समग्र कीचड़-कुकर्म को छेदित करने वाला है। अंधकार मृत्यु से लड़कर अमर जोत पाने का बहुत बड़ा संदेश है इन दीपों का। ये दीये रात को जलकर प्रात: होते-होते देश के उन शूरवीरों में तेज यश हो जाते हैं जो रात-दिन देश की चौकसी करते तेजस्वी यशस्वी बने रहते हैं।

शिव बजाए सिंघी बाजा

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

देवताओं के अपने वाद्य हैं। विष्णु का शंख, देवी का घंटा और शिव का सिंगी। शंख सागर से उत्पन्न होने वाला, घंटा पार्थिव धातु से बनने वाला और सिंघी पशुओं के सींग से तैयार होने वाला। ये विभिन्न काल और युगों के प्रतिनिधि और पहचान देने वाले बाजे भी हैं।

शिव के लोकभजनों में उनके सिंघी या शृंगी बजाने का वर्णन मिलता है। शिवपुराण में महारानी मैना के आंगन में शृंगी वादन कर नर्तन करते शिव का वर्णन आया है। शैव संन्यासियों द्वारा भी सिंघी नाद करने के प्रसंग मिलते हैं।

पशु सींग से निर्मित होने के कारण यह अमूमन खराब नहीं होता। पुराविद ज्ञानेंद्र श्रीवास्तव कहते हैं कि यह वाद्य

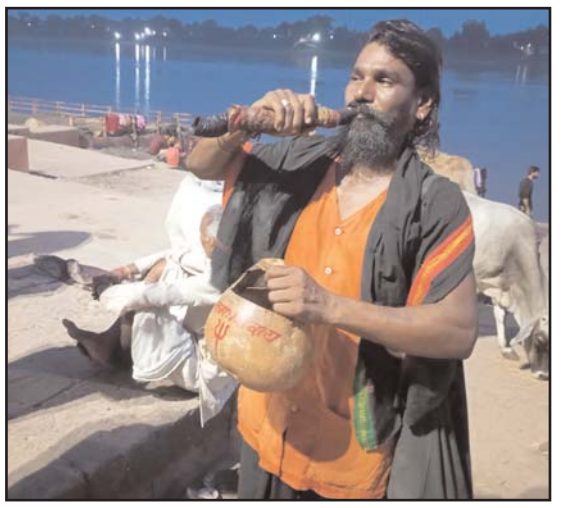

स्पाइरल या सींग की भाँति घुमावदार होता है। नोक की ओर से फूँकने के लिये खुला होता है और बजाने पर कर्कश और तीक्ष्ण ध्वनि उत्पन्न करता है। हमने इसे बाल्यकाल में चरवाहों के पास देखा है।

अधिक समय नहीं हुआ जबकि यह घरों में हुआ करता था और अनाड़ी लोग इसको बजा बजाकर अपने गाल और कान दर्द कर लेते थे। उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में इसे रमतूला कहते हैं। इसको विवाह आदि के अवसर पर बजाना शुभ माना जाता है किंतु विडंबना है कि इसे बजाने वाले समुदाय को दरिद्रता का पर्याय माना जाता हैं। किसी को रमतुलाही कहने का अर्थ है कि वह बहुत ही कमजोर और न्यूनतम आर्थिक स्थित वाला है या जिसकी जीविका नेग न्यौछावर से प्राप्त आय पर निर्भर हो।

ओडिशा में इसे 'कहली' और बजाने वालों को कहलिया कहते हैं। यह वहाँ के मूर्तिशिल्प में भी प्रचुरता से उत्कीर्ण है किंतु वहां भी कहलिया समुदाय कमजोर आर्थिक दशा वालों के रूप में ही चिन्हित है। ओडिशा का कटक नगर सींग निर्मित प्रसाधन उपकरणों एवं शो पीस निर्माण के लिये विख्यात है और इसके कुशल शिल्पी यहां हैं।

अत्रि विक्रमार्क कहते हैं कि खड्ग एक पशु का नाम है, उससे प्राप्त अस्त्र को खड्ग कहा गया। निषङ्ग शब्द वेदमन्त्रों में है, जिसका अर्थ खड्ग है। निषङ्ग से निहंग है जो तलवार धारण करते हैं। खड्ग विषाण अतिपुराकाल के अस्त्र हैं, जब धातु नहीं थी। खड्ग अर्थात् गेंडा का सींग , जिसे अस्त्र के रूप में प्रयोग किया गया। यह वादन के लिए भी काम में लिया जा सकता है।

इसके निर्माण की अपनी विधि है। उपलब्ध और योग्य पशु सींग को विभिन्न प्रकार के खराद जैसे उपकरणों से काट - छांटकर खोखला किया जाता है। सींग के अंदर का कुछ भाग शंख की भाँति ग्रुव वाला होता है और यह शंख की भांति ही मुँह से नियंत्रित फूंक मार कर बजाया जाता है। शंख में भी ऊपर की ओर एक छेद करना पड़ता है ।

एक सिंगी वादक मुझे नर्मदा तट पर नेमावर में मिला। नेमावर को नर्मदा का नाभि स्थल माना जाता है। यहां सिद्धेश्वर नाथ महादेव मंदिर पर परिक्रमा करने वाले संन्यासी यदि सिंगी धारी हैं, तो वादन करते हैं। मैंने वहीं सिंगी बाबा को वादन करते हुए देखा और फिर यह भी जाना कि अब यह बाजा लुप्त होने लगा है।

सूरदास ने अपने एक पद में सिंगी वादन का संदर्भ दिया है जिससे लगता है कि शिव के अनुयाई इसको बजाते थे। बालकृष्ण के दर्शनों के लिए जब जोगी शिव कैलास से चलकर आए तो उनकी पहचान में सिंगीनाद भी उल्लेखनीय था-

हे दैया मतवाला जोगी द्वारे मेरे आया है॥
जटाजूट शिर गंग बिराजत त्रैलोचन मन भाया है।
वृषभ ऊपर असवार होयकें श्री गोकुल को धाया है॥
बाघम्बर पाटंबर सोहे अंगछार लपटाया है।
कर त्रिशूल डमरू लियें खप्पर सिंगीनाद बजाया है॥
अरुण नैन विजयाजु चढायें आक धतुरा खाया है।
तिलक चन्द्रमा भृकुटी ऊपर जोगी जुगत बनाया है॥
रुंडमाल गरैं बीच बिराजत शेषनाग लपटाया है।
अद्भुत रूप धर्यो जोगीकौ मेरो गुपाल डराया है॥
देखों मैया तेरो बालक जिन मोयन चटक लगाया है।
सूरस्याम चरनरज बंदी दरशन में सचुपाया है॥

अपना देश अपनी संस्कृति

समाजसेवा की अग्रणी ब्राह्मणी डाक

चिट्ठी-पत्री ने आज मानव जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। डाक सेवा भी अब दिनों दिन सरल और सहज होती जा रही है परन्तु एक समय वह भी था जब आवश्यकताएं सीमित थीं, संसार बहुत छोटा था

तब आसपास के गांव भी विदेश ही थे। उस समय एक स्थान से दूसरे स्थान पर डाक पहुंचाने की व्यवस्था की भी अपनी निराली दास्तान है। राजस्थान तब अलग-अलग रजवाड़ों में बंटा हुआ था। इसी में एक मेवाड़ राज्य था उदयपुर के महाराणाओं का। इस राज्य में डाक की एक आदर्श व्यवस्था थी जो बामणी डाक (ब्राह्मणी डाक) के नाम से जानी जाती थी। ब्राह्मण के जिम्मे होने और उससे प्रारंभ होने के कारण यह डाक ब्राह्मणी डाक कहलाई। मेवाड़ में ब्राह्मण को बामण कहने से इसे बामणी डाक ही कहा गया।

इस डाक को प्रारंभ करने का काम सौंपा गया था महादेव प्रसाद ब्राह्मण को जो खेतड़ी रियासत में बवाई के रहने वाले थे। महादेव प्रसाद ने अपने तीनों लड़कों के बल पर यह भार उठाया। इन तीनों में से विश्वेश्वर दयाल उदयपुर, राजनगर, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़, कपासन, खेरवाड़ा की डाक संभालते थे।

भीलवाड़ा, जहाजपुर, काछोला की डाक का जिम्मा हनुमान प्रसाद का था। तीसरे पुत्र नौरंग सामान्य सहयोग करते और ऊपरी व्यवस्था देखते थे। उस सारी डाक का मुख्यालय उदयपुर की जड़ियों की ओल में था जो सदर केन्द्र मोती चोहट्टा में उदयसिंह मेहता की हवेली में स्थानांतरित हुआ। डाक सेवा का यह शुभारंभ महाराणा फतहसिंह के पहले हुआ कहा जाता है।

इसी डाक सेवा के अंतर्गत सारे मेवाड़ राज्य के पोस्टमास्टर पद संचालक हीरालाल आचार्य ने मुझे बताया कि सरकारी डाक पर कोई टिकिट नहीं लगता था। कोई महसूल भी नहीं लगाया जाता था। इसके बदले सरकार लमसम राशि दे देती थी। सरकारी डाक पर मेवाड़ राज सरकार लिखा रहता था।

इस तरह की सरकारी डाक रसीद से ली जाती और रसीद प्राप्त कर ही दी जाती थी। मेवाड़ के अन्दरूनी कई हिस्सों में इसकी शाखाएं खुली हुई थीं। महाराणा फतहसिंह के बाद महाराणा भूपालसिंह के समय में पहले पोस्टमास्टर मोतीलाल पालीवाल बने। इन्हीं मोतीलाल से आचार्य हीरालाल ने पोस्टमास्टरी का चार्ज लिया। लज्जानंद औदिच्य तब इंस्पेक्टर थे।

तब आज के पोस्टकार्ड की तरह कोई कार्ड नहीं थे। हाथ से लिखकर लोग कागज देते जिसके पोस्टेज के रूप में प्रति कागज दस पाई वसूली जाती थी। तब एक आने की बारह पाई होती थी। सौलह आने का एक रूपया होता था। एक रूपये में कुल 192 पाई होती। चिट्ठियां कागज पर लिखी जाती थी जो सीधी लपेट दी जाती।

पोस्टेज वसूल होने पर इन चिट्ठियों पर महसूल चुका की छाप लगती। जो कोई महसूल नहीं देता तो चिट्ठी पाने वाले से प्राप्त किया जाता। कोई बिना महसूल दिये चिट्ठी लेने से मना कर देता तो भेजने वाले से उसका दुगुना पोस्टेज वसूल कर लिया जाता। ऐसी चिट्ठियों पर लेने से इंकार लिख दिया जाता।

जहां सुलभ संचार होता वहां डाक प्रतिदिन पहुंचती। उदयपुर-चित्तौड़ रेलवे (यू.सी.आर.) से प्रतिदिन डाक चलती। हर स्टेशन पर डाक उतारी-चढ़ाई जाती और वहां से आसपास के गांवों में इसके वितरण की व्यवस्था चलती। रजिस्ट्री के चार आने (48 पाई) तथा सौ रूपये की मनीआर्डर फीस आठ आने थी।

यह सारी डाक महादेव प्रसाद ठेके पर चलाते थे। उदयपुर में तमाम बड़े-बड़े व्यापारियों की डाक भी ठेके पर चलती थी। इन व्यपारियों से प्रति चिट्ठी डाक का पैसा न लेकर प्रतिमाह की माहवारी बंधी होती थी। राज्य से इस संपूर्ण डाक का एग्रीमेंट होता था। शेष सारी व्यवस्था ठेकेदार महादेव के जिम्मे थी। वही सबको नियुक्ति देता और तनख्वाह बांटता था।

डाक सुविधानुसार प्रतिदिन से लगाकर 24 घंटे, 48 घंटे, 96 घंटे, चार दिन, सात दिन में एकबार जाती थी। डाक ले जाने वाला हलकारा कहलाता। यह प्राय: पैदल चलता। कहीं-कहीं घोड़ा भी काम आता। हलकारा विशेष पहचान लिए होता। इसके कमर में पट्टा बंधा होता जिसके घुघरे लगे रहते जो चलते समय अपनी ध्वनि देते।

इस पट्टे पर ब्राह्मणी डाक लिखा रहता। इसके हाथ में एक लंबी लकड़ी (लट्ठ) रहती जिस पर लाल कपड़ा चढ़ा रहता। इसके ऊपरी सिरे पर पीला कपड़ा बंधा होता। डाक खाकी थैलों में जाती जो केनवास तप्पड़ के बने होते। पूरे मेवाड़ क्षेत्र में ऐसे तीन सौ के करीब हलकारे थे जो डाक ले जाने का काम करते थे। इन हलकारों को रास्ते में चोर-डाकू का कोई भय नहीं था। चोर-डाकू मिल भी जाते तो वे दूर से ही हलकारे को पहचानकर आक्रमण नहीं करते। हलकारे की तनख्वाह महीने के पांच रूपये होती थी।

आचार्यजी ने बताया कि नाई से झाड़ोल फलासिया डाक ले जाने का काम एक आदिवासी महिला के जिम्मे था। प्रत्येक चिट्ठी पर जिस स्थान से आई और जहां पहुंची उन दोनों की छापें लगती।

जो चिट्ठियां कहीं होकर (वाया) जाती तो वहां की भी छाप उन पर रहती। कुछ लोग हलकारे को अपना मौखिक संदेश भी भेजते। कुछ अलग से चूट्या (छोटा) लिखा कागज पकड़ा देते ताकि उतना पोस्टेज बच जाता। प्रत्येक घर चिट्ठी बांटने वाला व्यक्ति अलग होता। यह चिट्ठीबांट्या (चिट्ठी बांटनेवाला) कहलाता।

स्वतंत्रता के आंदोलन में ब्राह्मणी डाक और मुख्यत: हलकारों का बड़ा योगदान रहा। इसके माध्यम से स्वतंत्रता सेनानियों के गुप्त संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पहुंचते और भीतर ही भीतर इस आंदोलन को एक विशेष प्रकार सुविधा मिलती थी।

- म. भा.

दीवाली, गोबर और गोवर्धन पूजा

- डॉ. तुक्तक भानावत -

भारत गांवों का कृषि प्रधान देश है। पूरी कृषि बैल पर निर्भर है। धरती का भार झेलने के लिए गाय ने अपने बेटे बैल को भेजा तभी तो बैल को लेकर कई गाथाएं, हीड़, स्तुतियां और पूजानुष्ठान प्रचलित हैं। गाय संस्कृति हमारे देश की आत्म संस्कृति है इसीलिए घर-घर गोपालन की प्रथा चली। राजा-महाराजा अपने यहां बड़ी तादाद में गायें रखकर अपने राज्य को सुख समृद्धिपूर्ण बनाये रखते थे। मंदिरों में भी बड़ी श्रद्धा-भक्ति से गायों का रखरखाव होता था। गुजरात का गोधरा नाम ही गायों से पड़ा। किसी समय वहां डाकोर मंदिर की एक लाख गायें तक रहीं। इसी कारण वह धरती गऊ-धरा कहलाई। कालान्तर में गऊ-धरा से गोधरा नाम हो गया। नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में गाय संस्कृति के कई निराले ठाठोत्सव देखने को मिलते हैं।

कृष्ण ने गायों को सर्वाधिक महत्व और ममत्व दिया फलस्वरूप पूरे भारत में अनेक रूपों में गाय संस्कृति का सांस्कृतिक अनुष्ठान और धार्मिक माहात्म्य फलित हुआ। गाय श्रेष्ठ दान की प्रतीक बनी और शादी-ब्याह जैसे मांगलिक प्रसंगों पर बहिन-बेटी को गाय देने की प्रथा चल पड़ी। भारतवंशियों ने गाय को माता माना और उतना ही आदर दिया। गोरोचन भी गाय से ही प्राप्त होता है। यह बहुत कीमती होता है जो गाय के मस्तिष्क से प्राप्त किया जाता है। हजारों गायों में से यह एकआध गाय में मिलता है।

गाय का दूध, मक्खन, छाछ सब स्वास्थ्यवर्धक है। मक्खन तो सर्वाधिक मूल्यवान है। इसीलिए बचपन में कृष्ण उसे येनकेन प्रकारेण और चौर्यकला तक से प्राप्त करने में नहीं हिचकते थे। नव ब्याहता गाय का दूध भी उतना ही बलिष्टकारी होता है। इस दूध में चना तथा मोगर की दाल खूब अच्छी तरह भिगो दी जाती है और फिर इसे एकाकार कर इसके लड्डू बनाये जाते हैं। ये लड्डू बड़े ताकतवर होते हैं जो कमजोर महिलाओं को खिलाये जाते हैं। इसी दूध को हल्की आंच दे गर्म पानी पर जमाकर बली नामक मिष्ठान्न बनाया जाता है जो बड़ा ही स्वादिष्ट तथा गुणकारी होता है। मेवाड़ में इसकी बड़ी बड़ाई है।

गायों का सर्वाधिक वर्धन हमारे देश में ही है। कृष्ण के कारण इसका सुव्यवस्थित समुचित वर्धन हुआ तो गोवर्धन पर्वत का किस्सा और महत्व उजागर हुआ। ब्रज में एक ग्वाला था जिसका नाम गोरधन था। इसकी घरवाली कृष्ण की परम भक्त थी। कृष्ण ने उसे दरसन दिये। वहीं गोरधन भी था। उसने चाह प्रकट की कि गाय के पांव से गचरने पर ही उसका प्राण निकले। यही हुआ तब कृष्ण ने उसी गाय के गोबर से उसका पुतला बनाया और घर-घर पूजा प्रारंभ की तब से दीवाली के दूसरे दिन गोरधन पूजा प्रारंभ हुई।

उसी दिन से गोबर का सर्वाधिक महत्व प्रतिपादित हुआ। तब से गोबर कहीं व्यर्थ नहीं जाने दिया जाता है। खेती के लिए सर्वोपयोगी गोबर का ही खाद कहा गया है। यह गोबर सारे धार्मिक अनुष्ठानों और मंगलकारी सुकृत्यों का श्रेष्ठ विधान है। व्रत कथाओं से जुड़े थापों का गोबरांकन सुख स्वास्थ्य और सुमंगल प्रदान करता है।

कुमारिकाओं का सांझी अनुष्ठान गोबर से ही विविध आकार लिए उभार पाकर प्रतिदिन रंगबिरंगी फूल-पत्तों से सुगंधता है। भाद्र माह में मारवाड़ में घरों की दीवालों पर गांव-गांव गोगाजी के हरिये गोबर के अंकन न केवल कलात्मक उभार देते हैं अपितु पूरे वर्ष गोगाजी महाराज उन्हें समग्र रोग, शोक, दुख, दारिद्रय से बचाये भी रखते हैं। सकरांत पर गोबर के सकरांतड़े, गोबर से बने होली के आभूषणों के प्रतीक बड़कुल्ले, वर्षादेवी को बुलाने के लिए घर-घर बच्चों द्वारा फेरी जाने वाली डेड़कमाता और दीवाल पर उल्टे मुंह लटके इन्द्र-इन्द्राणी, आखातीज पर गोबर के भूट्टे-भूट्टी लोकजीवन के आश-विश्वास के फलित चक्र हैं।

घर-घर में गोबर के कंडों-छाणों से ही गृहिणियां भोजन पकाती हैं। बड़ी रसोई दालबाटी भी कंडों पर ही बनती है। कई जगह

दाहक्रिया भी कंडों पर की जाती है। घर-आंगन की लींपापोती भी गोबर-माटी से की जाती है। दीवाली के महीने भर पहले से यह तैयारी प्रारंभ हो जाती। सुबह तीन-चार बजे उठकर कईबार मैं भी अपनी मां के साथ छापरड़े से छाणे बीणने जाती। लाल-पीली माटी लेने खान पर जाती और उसके पिंडोरे बनाकर रखदेती। वे दिन एक अलग ही मस्ती के होते। बरसात में जब घर टपकता तो मां बहुत परेशान होती। थोड़ी सी बरसात रूकने पर दीवाल के सहारे गोबर और उसकी राख मिलाकर मोटी परत लगाती। इसे रा-गोबर लगाना कहते जिससे पानी टपकना बंद हो जाता। अपने गांव कानोड़ में न

जाने कबसे गोबर्‌या भेरु को देख रही हूं जो सड़क के एक तरफ किनारे जमीन में गड़े हुए हैं। केवल उनका मुख-भाग बाहर निकला हुआ है। गांवों में गोबर गोबरी नाम रख मैंने कइयों को बड़ा प्रसन्न होते देखा। गोबर गणेश तो गांवों में ही क्यों, शहरों में भी मिल जायेंगे। अब तो गोबर गैस भी निकल आई है।

कृष्ण ने गोचर पर्वत पर खूब गायें चराई। बांसुरी बजाई। वहां गायों का वंशवर्धन हुआ फलस्वरूप उसका नाम ही गोवर्धन पड़ गया। वह पर्वत जहां गायों ने केलि-क्रीड़ा की। कृषि के लिए आवश्यक धन-संपदा दी। परिवारों को भरणपोषण दिया। ग्वालों को सुखदा गृहस्थी दी। ऐसा गोवर्धन गायों के चरने और गोबर से टीला बनते-बनते पहाड़ बन गया अन्यथा प्रारंभ में तो वहां मैदान ही था।

दीवाली पर धनवानों के घरों में धनदेवी लक्ष्मी की पूजा होती है पर पूरे राष्ट्र का धन तो सचमुच में गोबर ही है जो सभी के लिए उपादेय है। यह एक ऐसा धन है जो खजाने का नहीं, बैंक का नहीं, आभूषण किंवा जवाहरात का नहीं पर समग्र जीवनचक्र का, आम जनता के भरणपोषण से जुड़ी कृषि सभ्यता का है। यह धन रोटी देता है, कपड़ा देता है और मकान देता है। फूलों में सबसे बड़ा फूल कपास देता है जिससे बने कपड़े से दुनिया अपना तन ढकती है। गोबर सबके लिए उपयोगी अनिवार्य और अनुपम होने से आजीविका का संबल और जीवन पोषण का मुख्य स्त्रोत है। अत: गोबर भारत राष्ट्र का उत्कृष्ट धन है।

इसीलिए दीवाली के मोटे त्यौहार पर गोबर के गोवर्धन घर-घर, गांव-गांव बनाये जाते हैं। इस गोवर्धन को नये धान मकई से सजाया जाता है। हाथ-पांवों में अनाज के दानों की आभूषणिकांए बनाई जाती हैं। नई रुई और नये कपास का पहनावा दिया जाता है। गले की हांसली और कमर का कंदोरा बनाया जाता है। उनके नाभिस्थल पर गन्ने का रोपण किया जाता है।

यह प्रतीक है जीवन-रस का, सरसता का जो घर-घर, गांव-गांव संचरित हो। इस गोवर्धन को फिर गायों से गुचरवाया जाता है। गोवर्धन के पास एक तलैया बनाई जाती है जिसमें दही का बिलोवण किया जाता है। इस गोवर्धन की पूजा में गीत गाये जाते हैं। कुम्कम, चावल, मूंग, दीप, लच्छा, सुपारी एवं पान, पईसा से सजी थाल से गोवर्धन की पूजा में गाया जाता है-

ऊंचो जो खेड़े काना कांगणी जो वाई / कांगणी जो वाई
नींदणवाली ओ चंदरावतीजी
खोदतां जो नींदतां काना दोई जणा आया / दोई जणा आया
एक तो गोरा ने दूजा सांवलाजी
गोरा तो कीजे काना बाईसा रा वीरा / बाईसा रा वीरा
सांवरा तो कीजे बाईसा रा घर धणी जी
गोरा ने सोवे काना कसूमल पागां / कसूमल पागां
सांवरा ने सोवे डोरो रेशमीजी

अर्थात् - हे कन्हैया! ऊंचे खेत पर कांगणी बोई। चंदरावती ने उसे नींदी। खोदते-नींदते दोनों आये। उनमें से एक गोरा तथा दूसरा सांवला था। गोरा बाईसा का भाई तथा सांवला उसका पति था। गोरे को कसूमल पाग और सांवले को रेशमी डोरा शोभित था। दूसरा गीत-

गोरी गाव रो गोबर मंगाद्यो
रामदुवारे गोरधन मांडस्यां
रोली तो भोली फूल पतास्यां
गोरधन पूजण चालस्यां
सात सहेली रळ पूजा करस्यां
हंस हंस मंगल गावस्यां।।

अर्थात् - गोरी गाय का गोबर मंगादो। रामद्वारे गोरधन मांडेंगी। रोली फूल और पतासियों से गोरधन पूजा को चलेंगी। सात सहेलियां मिल पूजा करेंगी। हंस-हंस मंगल गीत गायेंगी।

पूजा का पूरा अनुष्ठान चलता है। सप्ताहभर यह गोवर्धन वहीं रहता है। फिर इसका विसर्जन कर दिया जाता है। आदिवासी इस गोवर्धन-गोबर धन में पैदा हुए कीड़ों से शकुन देखते हैं।

गोबर धन ही सचमुच में हमारा गोवर्धन बना हुआ है। गोबर कहां नहीं है? यह धन गरीब-अमीर सबमें बंटा हुआ है। इस राष्ट्रीय धन का वरण करते हुए भी हमने इसके महत्व को अजाना किया। आवश्यकता है, इस धन के पूरे उपयोग की। इसके महत्व को प्रतिपादित करने की। इसकी ऊर्जा के गुणात्मक महत्व की और इस क्षेत्र में अधुनातन प्रयोग और अनुसंधान की। गोबर हमारी भौतिक आवश्यकता और ऊर्जा का ही ताप नहीं, आध्यात्मिक और आत्मिक अलख का भी अक्षर विन्यास है।

दस दीवले

-बृजेन्द्र कौशिक-

(1)
ओ मन मेरे
चुप मत रहना
धौंस-धपट को धता बता कर
सच को
चौड़े-धाड़े कहना।
(2)
जो दुख का अमृत पीते हैं
रूखा-सूखा
खाकर भी वे
हम तुम से ज्यादा जीते हैं।
(3)
ऐसा
कभी न देखा पहले
कपट-कमाई के बल पर
जब
हावी हों दहलों पर नहले।
(4)
तुम भी तो
अपना मुंह खोलो

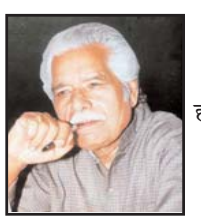

किसने
तुमको क्यों लतियाया
घरवालों से तो सच बोलो।
(5)
रक्षा-कवच
बनें जो अपना
तन से-मन से उन्हें
हर कदम पड़ता स्वयं
आग में तपना।
(6)
डर कर
चुप रहना खुद-घाती
आगे आ
जो उसे बुलाते
मौत
वहां पर कभी न जाती।
(7)
ज्ञानवान हैं
वही कहाते
जो करना
वह लग कर करते
किन्तु
किये को नहीं गिनाते।
(8)
जो
करने को फर्ज समझते
उनका लक्ष्य
उसे करना
वे
कठिन-सरल में नहीं उलझते।
(9)
जो तय करलें
यह करना है
करने में जुटते ही उनमें
बहता ऊर्जा का झरना है।
(10)
जो बनते हैं अधिक सयाने
कुछ करने से बचने को वे
हर दिन गढ़ते नये बहाने।

पेरालाईसिस मरीज को मिला नया जीवनदान

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने तीन माह वेंटीलेटर पर रहने के बाद पेरालाईसिस मरीज को नया जीवनदान दिया है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि हितारा, डुंगरपुर निवासी 17 वर्षीया पूजा कटारा को पेरालाईसिस के चलते भर्ती किया गया। भर्ती के समय मरीज के दोनों हाथ-पैर और डायफ्राम (श्वांस लेने वाली मांसपेशी) में कोई ताकत नही थी। इस कारण मरीज श्वांस लेने में असमर्थ थी। अत: मरीज वेंटीलेटर (कृत्रिम श्वांस देने की मशीन) पर थी। पिम्स हॉस्पिटल के बेहतर आई.सी.यू. देखभाल की वजह से तीन माह वेंटीलेटर पर रहने के बाद, मरीज स्वस्थ होकर अपने घर गई। मरीज के उपचार में पीडियाट्रिक विभाग के डॉ. विवेक पाराशर, डॉ. राहुल खत्री, निश्चेतना विभाग के डॉ. कमलेश शक्तावत, डॉ. अमित कुमार व

आई.सी.यू. नर्सिंग स्टाफ इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आशीष अग्रवाल ने बताया कि मरीज का पूरा उपचार राज्य सरकार की मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत नि:शुल्क हुआ है। पीआईएमएस हॉस्पिटल, उमरड़ा सभी नवीनतम सुविधाओं से सुसज्जित है व उदयपुर संभाग में चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

बाजार / समाचार

कानोड़ मित्र मंडल का स्नेहमिलन द लोटस काउंटी क्लब में संपन्न

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर में निवासरत कानोड़वासियों के मैत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल उदयपुर का वार्षिक पारिवारिक स्नेह मिलन 29 अक्टूबर को द लोटस काउंटी क्लब एंड रिसोर्ट में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. भारतराज अलावत, मुख्य अतिथि राजकुमार नलवाया एवं विशिष्ट अतिथि धर्मचंद नागोरी थे।

कार्यक्रम में मित्र मंडल के संस्थापक प्रख्यात लोककलाविद डॉ. महेंद्र भानावत, प्रख्यात योग एवं डाइट विशेषज्ञ मदन मोदी, सुंदरलाल अलावत, हिम्मतसिंह पोखरना की विशेष उपस्थित रही। उपकार मसाले एवं रूट्स के डायरेक्टर जेड. ए. कानोड़वाला, कुतुबुद्दीन कानोड़वाला, सोहनलाल भानावत, भगवतीलाल भाणावत एवं कई नामी-गिरामी हस्तियों ने सपरिवार कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण 'वाह भाई वाह' फेम प्रसिद्ध हास्य कवि सिद्धेश्वर सिद्धू थे जिन्होंने कविताएं सुनाकर सभी प्रतिभागियों को गुदगुदा दिया।

मित्र मंडल के महामंत्री दिलीप भानावत ने बताया कि कार्यक्रम में 27 प्रतिभाओं, भामाशाहों एवं समाजसेवियों को उपरना, पगड़ी एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान कई सारी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान स्विमिंग पूल एवं लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठाया। कार्यक्रम ने सर्वधर्म समाज एकता का बेहतरीन उदाहरण पेश किया।

मित्र मंडल के अध्यक्ष पूर्व न्यायाधीश हिमांशु नागोरी ने भावी योजनाओं की जानकारी देते सदस्य संख्या बढ़ाने, सदस्यों की संक्षिप्त परिचायिका प्रकाशित करने तथा अपना निजी भवन बनाने पर बल दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में जीवनसिंह पोखरना, संजय अलावत, कोमल वया, त्रिभुवनसिंह राव, श्रीमती गरिमा बाबेल, श्रीमती सरोज सोनी, दिनेश नंदावत, अनिल पुरोहित, मनोज दक, लोकेश बाबेल, इकबाल बोहरा, प्रदीप दक, विनोद जारोली, निर्भय बाबेल एवं गिरिराज सोनी का सक्रिय योगदान रहा।

महिलाओं की जागरूकता से ब्रेस्ट कैंसर से बचाव संभव

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल उमरड़ा में शनिवार को ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कैंसर सर्जन डॉ. शैलेष पाटीदार एवं कैंसर फिजिशियन डॉ. सचिन जैन थे। इस अवसर पर वाइस चांसलर डॉ. जे. के. छापरवाल, प्रिंसिपल डॉ. सुरेश गोयल, मेडिकल सुप्रीडेंटेंट डॉ. चंदा माथुर तथा डॉ. कमलेश शेखावत उपस्थित थे।

डॉ. शैलेष पाटीदार ने बताया कि अक्टूबर में प्रतिवर्ष ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता माह मनाया जाता है। ब्रेस्ट कैंसर किसी को भी प्रभावित कर सकता है लेकिन महिलाओं में यह मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। महिलाओं को यदि ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूक किया जाए तो ज्यादार महिलाएं खुद का बचाव कर इस घातक बीमारी से बच सकती हैं। डॉ. पाटीदार ने बताया कि डब्ल्यूएचओ के अनुसार स्तन कैंसर महिलाओं को होने वाला सबसे आम कैंसर है और मौतों का लगभग 15 प्रतिशत है। ब्रेस्ट कैंसर का खतरा उम्र के साथ बढ़ता है। यह रोग आनुवांशिक भी है। जिन महिलाओं में स्तन कैंसर का निदान किया जा चुका है उन्हें इस बीमारी के होने की संभावना अधिक होती है। अधिक वजन वाली महिलाओं, शराब का अधिक सेवन, अधिक मात्रा में गर्भ निरोधक लेने, मासिक धर्म की जल्दी शुरूआत होने, अधिक उम्र में मां बनने, खराब लाइफस्टाइल, असंतुलित खानपान भी स्तन कैंसर के कारण बनते हैं।

डॉ. सचिन जैन ने बताया कि स्तन में या बगल में गांठ होना, स्तन की त्वचा का लाल होना, स्तर के आकार में बदलाव होना, निप्पल का लाल होना या उल्टा होना, निप्पल से खून जैसा तरल पदार्थ निकलना, स्तन या निप्पल में जलन या सिकुड़न होना ब्रेस्ट कैंसर के प्रमुख लक्षण है। डॉ. जैन ने बताया कि कैंसर की चार स्टेज होती हैं। स्टेज 0 से स्टेज 1 दोनों के लिए पांच साल जीवित रहने की दर 100 प्रतिशत, स्टेज 2 और 3 स्तन कैंसर के लिए पांच साल जीवित रहने की दर क्रमश: 93 और 72 प्रतिशत तथा स्टेज 4 वाले मरीज में केवल 22 प्रतिशत तक जीवित रहने की संभावना रहती है।

डॉ. जैन ने बताया कि वजन को कंट्रोल कर ब्रेस्ट कैंसर से बचा जा सकता है। इसके अलावा नियमित व्यायाम, फिजिकल एक्टिविटी, योगा, मेडिटेशन, संतुलित खानपान, फल और सब्जियों का ज्यादा सेवन, शराब, स्मोकिंग बंद करके, 40 की उम्र के बाद वार्षिक मैगोग्राफ स्क्रीनिंग, नैदानिक स्तन परीक्षण, किसी भी बदलाव की निगरानी और समय पर इलाज से ब्रेस्ट कैंसर से बचा जा सकता है।

हिन्दू कॉलेज में एकता दिवस आयोजित

दिल्ली (ह. सं.)। राष्ट्रीय एकता हमारा सबसे महान मूल्य है जिसे हमने स्वाधीनता आंदोलन से अर्जित किया है। राष्ट्रीय एकता के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, वीर सैनिकों और नागरिकों ने महान बलिदान दिए हैं। राष्ट्रीय एकता दिवस उस महान विरासत की पावन स्मृति है। युवा पीढ़ी को हमारी महान विरासत से प्रेरणा लेनी चाहिए। ये विचार हिन्दू कालेज में राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह में प्राचार्य प्रो. अंजू श्रीवास्तव ने व्यक्त किये। स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस पर हिन्दू कालेज राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में प्राचार्य प्रो. श्रीवास्तव ने शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए प्रयास करने की शपथ दिलाई।

समारोह के बाद प्रो. श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय सेवा योजना के दल को कर्त्तव्य पथ पर हो रहे 'मेरी माटी मेरा देश' समारोह के लिए रवाना किया।

-जिगीशा भार्गवी

मोटोरोला ऐज 40 नियो और मोटो जी54 फाइव जी पर डिस्काउंट की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। मोटोरोला ने फ्लिपकार्ट बिग दिवाली सेल से पहले अपने स्मार्टफोन पर भारी छूट की घोषणा की है। 1 नवंबर से फ्लिपकार्ट प्लस मेंबर्स के पास मोटोरोला ऐज, मोटो जी, और मोटो ई सीरीज के स्मार्टफोन को आकर्षक बिग दिवाली सेल कीमतों पर खरीदने के लिए अर्ली एक्सेस की सुविधा उपलब्ध है। आई पी 68 रेटिंग वाला मोटोरोला ऐज 40 दुनिया का सबसे स्लिम 5जी फोन है, जो 26,999 रुपये की बेमिसाल कीमत पर उपलब्ध है। मोटो जी54 5जी ग्राहकों को 20 हजार से कम कीमत के सेगमेंट में शानदार कीमतों पर बेमिसाल प्रदर्शन का अनुभव प्रदान करता है, और इसके 8+128 जी बी तथा 12+256 जी बी वेरिएंट क्रमश: 13,999 तथा 15,999 रुपये की कीमत पर उपलब्ध है। 8 जीबी रैम और 128 जीबी स्टोरेज के साथ सबसे किफायती स्मार्टफोन, मोटो ई13 छूट के साथ सिर्फ 7,499 रुपये की कीमत पर उपलब्ध है। लंबे समय तक चलने वाली पावर और बेहद कम डाउनटाइम को ध्यान में रखते हुए इस डिवाइस में 5000एमएएच की दमदार बैटरी लगाई गई है। मोटोरोला ऐज 40 नियो दुनिया का सबसे हल्का आई पी 68 रेटेड 5जी स्मार्टफोन होने के साथ-साथ दुनिया का पहला ऐसा स्मार्टफोन भी है, जिसमें मीडियाटेक डायमेनसिटी 7030 प्रोसेसर लगाया गया है, जो ग्राहकों के लिए 22,999 रुपये की शुरुआती कीमत पर खरीदारी के लिए उपलब्ध है। 20 हजार से कम के सेगमेंट में, मोटो जी84 5 जी पहला ऐसा स्मार्टफोन है जिसे क्यूरेटेड कलर्स में लॉन्च किया गया है, और साल 2023 के कलर ऑफ द ईयर- वीवा मैजेंटा में वीगन लेदर फिनिश के साथ यह स्मार्टफोन 18,999 रुपये की कीमत पर उपलब्ध होगा।

जेके टायर का शुद्ध लाभ बढ़कर 249 करोड़ हुआ

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड (जेके टायर) ने वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही के लिए अपने अनअंकेक्षित परिणामों की घोषणा की है। समेकित आधार पर, शुद्ध राजस्व 4 प्रतिशत बढ़कर रु. 3,905 करोड़ हो गया और एबिडिटा वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 305 करोड़ रुपये की तुलना में बढ़कर 597 करोड़ रुपये हो गया। उक्त अवधि में कंपनी ने कर पूर्व लाभ 377 करोड़ रुपये एवं कर पश्चात लाभ 249 करोड़ रुपये का अर्जित किया है ।

चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने लाभप्रदता में कई गुना वृद्धि के साथ वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही में राजस्व में अपना मजबूत प्रदर्शन जारी रखा है। बड़े बाजार में उपस्थिति पर निरंतर जोर ने सभी खंडों और उत्पाद श्रेणियों में बिक्री को बढ़ावा दिया। संपूर्ण रेडियल रेंज, पीसीआर/एलटीआर/टीबीआर में उत्पाद मिश्रण के संवर्धन पर रणनीतिक फोकस के सकारात्मक परिणाम आए हैं। लागत में कमी और आंतरिक दक्षता बढ़ाने के लिए चल रहे प्रयास हमारे परिचालन का आधार बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि क्रमिक तिमाही में, निर्यात बिक्री में भी दो अंकों की स्वस्थ विकास दर दर्ज की गई है। जेके टायर की सहयोगी कंपनियां कैवेंडिश इंडस्ट्रीज लिमिटेड (सीआईएल) और जेके टॉर्नेल, मैक्सिको कंपनी ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है एवं कंपनी के समग्र राजस्व और लाभप्रदता में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

फेविकोल रेलम से फर्नीचर को दे नया लुक

उदयपुर (ह. सं.)। त्योहारों के दिन आ गए हैं और हम अपने घरों की दरो-दीवार को पेंट से सजा रहे हैं और सजावट का सामान बदल रहे हैं तो फर्नीचर को क्यों पीछे छोड़ दिया जाना चाहिए? ज्यादातर मामलों में त्योहारी सीजन के दौरान फर्नीचर को बदलने या पूरी तरह से नया लुक देने को नजरअंदाज कर दिया जाता है क्योंकि इसे महंगा, बोझिल और अस्त-व्यस्त करने वाला माना जाता है। हालांकि, आपके घर का सामान भी एक ताज़ा लुक का हकदार है और वह भी बिना किसी परेशानी के, शोर और धूल के! फेविकोल रेलम के साथ, फेस्टिव सीज़न में अपने फर्नीचर को नया रूप देना एक परेशानी मुक्त प्रेक्टिस बन जाता है।

फेविकोल रेलम का उपयोग करके, अब आप लैमिनेट पर लैमिनेट चिपका सकते हैं और इस प्रकार फर्नीचर रेनोवेशन प्रोसेस को आसान बना सकते हैं। फेविकोल रेलम एडहैसिव कुछ घंटों में इंस्टेंट पकड़ और प्रोसेसिंग स्ट्रेंथ देता है। इसमें कोई गंध नहीं है। इसका उपयोग करना आसान है और उपयोग से पहले इसको अच्छी तरह से मिक्स करने की भी जरूरत नहीं होती है। फेविकोल रेलम यह सुनिश्चित करता है कि लैमिनेट आसानी से चिपक जाए और बिना किसी गड़बड़ी के एक प्रोफेशनल फिनिश दे।

सबसे बड़ा स्टार्टअप फेस्ट 4 से

उदयपुर (ह. सं.)। जयपुर में मारवाड़ी कैटालिस्ट की ओर से 4-5 नवंबर को होने वाले विशाल इवेंट स्टार्टअप एक्सचेंज 4.0 गूगल, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक एवं सिडबी की सहभागिता से आयोजित किया जाएगा जिसमें एक ही स्थान पर यूनिकॉर्न एवं सूनिकॉर्न के संस्थापक, निवेशक, इंडस्ट्री लीडर्स, न्यू एज स्टार्टअप्स के साथ ही पांच से अधिक राज्यों के प्रमुख सरकारी अधिकारी भी शिरकत करेंगे।

मारवाड़ी कैटालिस्टस के संस्थापक सुशील शर्मा ने बताया कि यह आयोजन राजस्थान में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने, वित्तीय संसाधनों के अधिक प्रवाह को सुनिश्चित करने और स्टार्टअप के सतत विकास को सुनिश्चित करेगा। स्टार्टअप में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए यह अभूतपूर्व मौका होगा जहां पर वह स्टार्टअप कम्युनिटी से मिल पाएंगे एवं अपने संबंध स्थापित कर पाएंगे, साथ ही नए स्टार्टअप की दिशा में अपने कदम बढ़ा पाएंगे। राजस्थान में होने वाले इस सबसे बड़े स्टार्टअप समागम में भारत के टियर 2 एवं 3 शहरों जैसे सूरत, नासिक, नागपुर, अहमदाबाद, इंदौर, चंडीगढ़, जयपुर, जोधपुर आदि के सभी स्टार्टअप को एक इकोसिस्टम में आकर जुड़ने का मौका मिलेगा। इस स्टार्टअप फेस्ट का मुख्य आकर्षण यूनिकॉर्न फाउंडर्स एवं प्रसिद्ध निवेशकों द्वारा भविष्य के उद्यमियों को मोटिवेट करना एवं सक्सेस टिप्स देना होगा।

रैडिसन ब्लू 'बेस्ट वेडिंग होटल' अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। रैडिसन ब्लू पैलेस रिज़ॉर्ट ऐंड स्पा, उदयपुर को टुडेज़ ट्रैवलर अवार्ड्स 2023 में 'उदयपुर में बेस्ट वेडिंग होटल' के खिताब से सम्मानित किया गया है। इस ब्रांड को यह अवार्ड ताज पैलेस, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। टुडेज़ ट्रैवलर अवार्ड्स कॉर्पोरेट, हॉस्पिटैलिटी, यात्रा और पर्यटन उद्योग में असाधारण प्रदर्शन को सम्मानित करता है। यह समारोह टुडेज़ ट्रैवलर की 26वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित किया गया था। इस अवसर पर 400 से अधिक जानेमाने सेलिब्रिटीज, उद्योगपति और यात्रा एवं पर्यटन उद्योग के गेम-चेंजर उपस्थित थे।

रैडिसन ब्लू पैलेस रिज़ॉर्ट ऐंड स्पा, उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सोमेश अग्रवाल ने कहा कि उदयपुर में सर्वश्रेष्ठ वेडिंग होटल श्रेणी में टुडेज़ ट्रैवलर अवार्ड प्राप्त करके हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं। शुरुआत से ही वेडिंग मार्केट में धाक जमाने पर हमारा स्पष्ट फोकस रहा है। हम जानते थे कि इस क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाएं हैं और इसके लिए हर प्रयास करने को तैयार थे। पिछले कुछ वर्षों में, हम ब्रांड को सर्वोत्तम विवाह स्थल के रूप में स्थापित करने में सफल रहे हैं। यह पुरस्कार हमारे ग्राहकों और वेडिंग टूरिज्म इंडस्ट्री को हमारी राजसी सुविधाओं, बेहतरीन क्वालिटी की हॉस्पिटैलिटी और व्यक्तिगत नजरिये के साथ सेवा देने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हमारे प्रयासों को पहचानने और इसके लिए हमें सम्मानित करने के लिए टुडेज़ ट्रैवलर्स टीम के आभारी हैं। रैडिसन ब्लू में ईशा अंबानी और आनंद परिमल का प्री-वेडिंग समारोह, नील नितिन मुकेश और रुक्मणी की शादी और अन्य हाई-प्रोफाइल शादियाँ शामिल हैं। इससे उद्योग में परफेक्ट डेस्टिनेशन वेडिंग वेन्यू के रूप में इसकी प्रतिष्ठा और मजबूत हुई है। भारत में शानोशौकत से होने वाली शादियों के ट्रेंड में काफी उछाल आया है, इसे देखते हुए पैलेस इस साल 100 भव्य शादियों की मेजबानी करने के लिए तैयार है।

डॉ. शाह 'हेल्थकेयर पर्सनैलिटी ऑफ द ईयर' अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। शैल्बी हॉस्पिटल्स के संस्थापक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और भारत में घुटने की सर्जरी (घुटने के प्रतिस्थापन) के अग्रणी डॉ. विक्रम शाह को फिक्की हेल्थकेयर एक्सीलेंस अवार्ड्स के 15वें संस्करण में प्रतिष्ठित 'हेल्थकेयर पर्सनैलिटी ऑफ द ईयर 2023' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

फिक्की हेल्थकेयर एक्सीलेंस अवार्ड्स स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए कुछ असाधारण प्रतिभाओं को दिए जाते हैं। अवार्ड्स का उद्देश्य उन दूरदर्शी लोगों को सम्मानित करना है जिन्होंने स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, क्षेत्र की क्षमताओं को आगे बढ़ाया है और अनगिनत लोगों के स्वास्थ्य में सुधार किया है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में डॉ. विक्रम शाह के अनुकरणीय कार्य के लिए नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार समारोह में उनको यह पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. विक्रम शाह ने फिक्की का आभार व्यक्त किया और कहा कि वह शेल्बी के 15 अस्पतालों, 5,000 स्टाफ सदस्यों और 2,000 डॉक्टरों की ओर से इसे स्वीकार कर रहे हैं। डॉ. विक्रम शाह ने कहा कि पचास साल पहले भारत में बहुत कम अस्पताल थे और लोगों को जटील सर्जरी के लिए दिल्ली, मुंबई या चेन्नई जाना पड़ता था। आज हालात बदल गए हैं और सर्वोत्तम उपचार छोटे शहरों में भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा भारत चिकित्सा पर्यटन के केंद्र के रूप में उभरा है और दुनियाभर से लोग इलाज के लिए भारत आ रहे हैं और ऐसा इसलिए नहीं है कि इलाज कराना सस्ता है, बल्कि इसलिए कि हम ऐसी सर्जरी करते हैं जो अमेरिका या ब्रिटेन में भी नहीं की जाती।

माहवारी की समस्या के बावजूद मिला मातृत्व सुख

उदयपुर (ह. सं.)। नि:संतानता से प्रभावित ज्यादातर महिलाओं को यह लगता है कि वे कभी मां नहीं बन पाएंगी लेकिन आधुनिक तकनीकों के इस युग में सही समय पर एक्सपर्ट राय और उपचार लिया जाए तो मुश्किल समस्याओं में भी संतान प्राप्ति हो सकती है। इन्दिरा आईवीएफ अलवर की सेंटर हेड डॉ. चारू जौहरी ने बताया कि ऐसा ही एक मामला सामने आया अलवर में जहां 27 वर्षीय सलोनी (बदला हुआ नाम) को कभी माहवारी नहीं आने के बावजूद संतान सुख प्राप्त हुआ है। सलोनी को पहली बार महावारी 15 वर्ष की उम्र में डॉक्टर द्वारा दवाइयां देने पर आयी थी। इसके बाद कभी प्राकृतिक रूप से पीरियड्स नहीं आए। इस मामले में प्राकृतिक रूप से गर्भधारण में की संभावना बहुत कम होती है। दम्पती ने काफी प्रयासों के बाद असफल होने पर इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पिटल में सम्पर्क किया, जहां आधुनिक आईवीएफ उपचार से सफलता मिल गयी। सेंटर में अल्ट्रासाउंड जांच करने पर गर्भाशय छोटा दिखा और हार्मोन का स्तर बहुत कम पाया गया। हाइपो एक दुर्लभ लेकिन इलाज योग्य स्थिति है जो नि:संतानता का कारण बन सकती है। उचित परामर्श और समय पर उपचार के साथ, हाइपो-हाइपो वाली कई महिलाएं अपने स्वयं के अंडों से गर्भधारण करने में सक्षम होती हैं।

पोथीखाना

बंगले में झोंपड़ी का सुख लेते डॉ. राजमल लोढ़ा

-डॉ. कहानी भानावत-

'झोंपड़ी से बंगले तक' नामक पुस्तक डॉ. राजमल लोढ़ा द्वारा लिखित उनकी आधीअधूरी आत्मकथा है। पुस्तक की प्रस्तावना के प्रारम्भ में ही उनका यह कथन उल्लेखनीय है - ''झोंपड़ी से बंगले तक' पुस्तक का परिवेश राजस्थान के मेवाड़ अंचल की एक परिवार की व्यथा कथा का है। व्यथा से प्रारम्भ होकर कथा सुखद अवस्था में परिवर्तित हो जाती है।'' दरअसल उनकी जीवनी का प्रारम्भ अनेक संघर्षों की कथा-गाथा लिए है। इसे व्यथा-कथा कहना समीचीन नहीं होगा। भारत में आज भी गांव और शहरों में जो लोग अपना जीवन बसर कर रहे हैं उनकी कथा-गाथा को भले ही हम व्यथा का नाम दें किन्तु वह उनके संघर्ष का इतिवृत्त है।

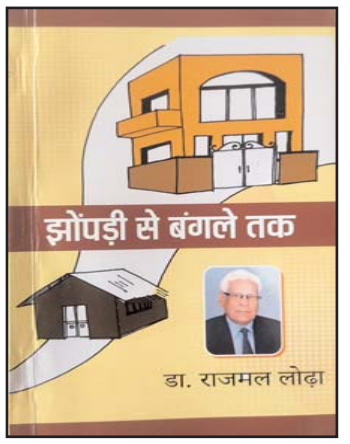

विद्वानों ने जीवन को उस घर्षण का नाम दिया है जिससे तात्कालिक चिंगार निकलती है और विलीन हो जाती है। यह जो घर्षण है वही जीवन की कसमकश है। इसमें जो जितना गहरा पैठता है वह उतना ही निखार देता है। राजमल लोढ़ा का जीवन भी इसीलिए महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने अनेक पापड़ बेले। छोटे से गांव में अपनी रेंगती हुई जिंदगी को संवारते हुए लगातार संघर्षों से जूझते हुए उन्होंने अपना जीवन स्वत: निर्मित किया जैसे बरसों तक पानी के थपेड़े खाते-खाते कोई पत्थर तराशा मिलता है।

उन्होंने लिखा भी- ''गांव में किसानों के शादी-विवाह के अवसर पर माताजी उनके विवाह का आटा, दलिया, बेसन आदि रात भर तैयार करती थी। मैं सामाजिक भोज में पूड़ियां निकालता। गांव के लोग हमें बहुत प्यार करते थे। भाणेज देवरी यानी बहन का बेटा और बेटी देवता समान मानते थे। उम्र से अधिक कार्य क्षमता के कारण हमें अधिक मजदूरी भी देते थे, गरीबी से गज खाकर नहीं।' (पृष्ठ 6)

इन पंक्तियों से सामान्य जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के सामाजिक जीवन और ग्रामीणजनों के आपसी हेलमेल और एक-दूसरे के निस्वार्थ तथा छोटे बड़े के रिश्तों तथा आत्मसम्मान की व्यावहारिक झलक मिलती हैं।

डॉ. लोढ़ा पढ़ने में सर्वदा असाधारण विद्यार्थी रहे। अपने बचपन की विकट परिस्थिति का वर्णन करते हुए बड़े संवेदनशील हुए लगते हैं। वे लिखते हैं- ''कक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान मेरा एक एकाधिकार था। स्टूडेंट यूनियन में कोषाध्यक्ष मेरा स्थाई पद रहता। कक्षा का मॉनिटर था। कमजोर धनवान साथी मेरे से होमवर्क की कॉपियां ले जाते बदले में खाली कॉपियां व पाठे आदि दे देते थे। मैं विद्यार्थियों को फुटबॉल खेलाने ढाणी गांव ले जाता। मैं आसपास घूमकर गोबर इकट्ठा कर सूखा देता। जब गुरुजी उपले खरीद लाने को कहते तो मैं काफी सस्ते में अपने उपले लाकर देता। तेल के दीपक या चिमनी की रोशनी में पढ़ता। टाट के बिस्तर पर सोता ताकि सुबह जल्दी उठकर खरीद बेच कर सकूं।'' (पृष्ठ 11)

उदयपुर में आकर डॉ. लोढ़ा ने दिल्लीगेट के बाहर शान्ति मिष्ठान्न भंडार की दुकान पर एक रुपया प्रति घंटे के हिसाब से अकाउंट्स का काम किया। मालिक ने उनकी सेवाओं से प्रसन्न हो पांच रुपये और अधिक दिए। ऐसे करते डॉ. लोढ़ा लगातार अपने संघर्ष की कहानी बुनते आगे-से-आगे अध्ययन करते रहे और अपनी ख्यात प्रतिभा से उच्च घरों के बच्चे-बच्चियों की ट्यूशन भी लेते रहे। ऐसे करते-करते उन्होंने भूगोल में एम. ए. और पीएच.डी. की पढ़ाई पूरी की और सुखाड़िया विश्वविद्यालय में भूगोल के आचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देते छात्रों में और प्रशासनिक दृष्टि से भी लोकप्रियता प्राप्त की।

यह सच है कि विनम्र और सदाचारी तथा शैक्षणिक दृष्टि से अव्वल रहने वाले लोग बड़े होने पर भी अपनी जमीनी हकीकत को आत्मसात किये रहते हैं और वस्तुत: उन्हीं का बड़प्पन न केवल उनके परिवार में अपितु इतर समाज के लिए भी अनुकरणीय होता है। डॉ. लोढ़ा ने समाजसेवा की दृष्टि से भी बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। पर्यावरण के क्षेत्र में अब तो अनेक व्यक्ति आगे हैं परंतु आठवें, नवें दशक में उनका नाम शीर्षस्थ पर्यावरणविदों में अग्रणी था।

डॉ. महेंद्र भानावत ने 19 जनवरी 1992 को उदयपुर से प्रकाशित जय राजस्थान के अपने 'चलते-चलते' स्तंभ में पर्यावरण चेतना के प्रहरी डॉ. लोढ़ा के लिए ठीक ही लिखा - ''आज जब हवा, पानी, जमीन और वनस्पति सब-के-सब नहीं रहे तो मनुष्य कैसे वह हो सकता है जो प्रकृति का पुतला है। पहाड़ पोले कर दिए गए। नदियां बांध दी गई। वन का वैभव लूट लिया गया तो ऋतुओं ने राह बदल ली।

मौसम बेमानी हुआ। मानव दानव हो गया। चिन्तन प्रधान देश भारत भी कम चिंतित नहीं हुआ। पर्यावरण की यह चेतना सरकारी कागजों में खूब फली। आंकड़ों में बड़े अंबार लगे पर बिरले ही रहे वे जिन्हें चिंता हुई। डॉ. राजमल लोढ़ा उन्हीं चेतना प्रहरियों में से एक हैं जिन्होंने उदयपुर को प्रदूषण की कालिमा से बचाने के लिए जो सजगता और जागरूकता दी वह कई दृष्टियों से मूल्यवान और रेखांकित करने वाली है। बीछड़ी प्रदूषण को राष्ट्रीय स्तर पर उभार कर जो वातावरण बनाया गया उससे वह कारखाना ही अंततोगत्वा बंद करना पड़ा।'' (पृष्ठ 78)

कुल मिलाकर 10 बिंदुओं में 90 पृष्ठों में यह पुस्तक उन लोगों के लिए पठनीय है जो संघर्षों के राही बनकर अपनी राह स्वयं बनाते हैं और उच्चतम शिखर तक पहुंचते हैं। सच तो यह है कि डॉ. लोढ़ा बंगले में भी झोंपड़ी का ही सुख लिए आनंदित हैं।

असंख्य रंगों का धनक है दीपक

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

मेरा दीपक ज्योति का अक्षय स्त्रोत है
अनन्त-अनन्त किरणों का अक्षर धाम है
ज्ञान का अखंड अमृत कलश है
वह अनवरत छलकता रहता है
उसके प्रकाश में तेज है, चकाचौंध नहीं
असीम ऊर्जा है, जलन नहीं
वह सर्व लोकों की सर्व दिशाओं को समेटता है
वह परम शक्ति का अनिंद्य अंश है।

वह कोई रंगरेज नहीं है मगर असंख्य रंगों का धनक है
उसने कपास को कैसा फूल दिया श्वेत शुभ्र महीन रेशों वाला
वह कतता रहता है बुनता रहता है कपड़ा
उस कपड़े से कितनी दुनियां ढकती हुई अपनी लाज बचाती है
उसने गुलाब दिया कैसा सुकोमल बनाठना सा
उसकी कलियों को देखो
कितने रूप रस गंध को समेटे है अपने में।

अन्तर्जमीन में न जाने कितने खजाने हैं उसकी देखरेख में
कैसे भेदती है, छेदती है किरण कि सब झिलमिलाने लगते हैं
कितनी तरह की पंक्तियां होती हैं
प्रकाश का कौनसा अंश उन्हें पल्लवित करता है
कैसे-कैसे कितने-कितने प्राणों का आत्मांकुर उन्हें सहेजता है
नदियों के पेटों से किरणों की डोरें आकाश को नीलांगन देती हैं
कैसे तनती हैं नक्षत्रों की पतंगें
प्रकाश कैसे थमता, हवा में झूलता, बर्फ में जमता है
वे सब सांसें तुमने ही छोड़ रखी हैं
जो मनुष्य को जीवन, धरती को कंपन और समुद्र को उफन देती हैं।

नन्हा सा दीपक अनंत किरणों का सूरज है मेरा
गहन तिमिर में चौराहे पर घर-बाहर डाले डेरा।

दीपक तुम कितने अजूबे गजब करिश्मे वाले हो
तुम्हारे नीचे अंधेरा है।

तुम्हारे तल-अतल में अनन्त वैभव का अखंड साम्राज्य है
विराट भव भूतियों की विभूतियों का वरेण्य वर्चस्व है
कहां तक जाती है तुम्हारी लौ अनन्त-अनन्त आकाश में
उस रहस्य को कैसे कोई जान पाया, छान पाया
हड़बड़ाती गड़बड़ाती दुनियां में तुम कितने शांत और एकांत हो
कैसी दीवाली करते हो तुम जब सारा अगजग रोशन-रोशन हो जाता है
कितने शब्द अर्थ और कोश हैं कि तुम बांधे नहीं बंधते हो
कैसे हो तुम कि जो अंधकार में प्रकाश देते हो
जड़ में चेतन का वास करते हो
मृत्यु में अमरत्व का सींचन देते हो।

हर हाड़ और पहाड़, झाड़ और झंखाड़ तुमसे चलायमान है
राम के धनुष में तुमने ही भरा था विजय घोष
कृष्ण के कुरूक्षेत्र में गीता की रश्मि का प्रस्फुटन
तुमने गूलर को फूल और बोधि को बोधमय बनाया
सबकी आंखों में उजास और पांखों में हवा का बीज दिया
सबकी तरह तुम भी एक एक हो, अनेक हो, विरल हो, विस्मय हो
तुम मिट्टी में कितने रौंदे गोंदे और मटियामेट हुए हो
चाक पर कितनी भमरेटियों में कैसे-कैसे भचेड़े खाये हो
अग्नि की लपटों में कैसी तपन झेली है तुमने
जो जितना निखरता है उतना ही खरा होता है
खरे में कोई खोट नहीं होती।

वह अकेला हो चाहे अनंत कोई फर्क नहीं पड़ता
दीपक तुम कितने नन्हे लघु-लघु और अरूप हो
मगर तुमने दुनियां को आत्मसात किया है
कितना घना अंधकार पिया है तुमने
तुम्हीं दे सकते हो इतना प्रकाश, उज्ज्वल उजास
तुम्हीं हो सकते हो अकूत सामर्थ्य की संभावनाओं वाले दीपक
तुम्हीं बिखेर सकते हो इतना हास
तुम्हीं रचा सकते हो इतना रास
सबसे दूर सबके आसपास।

फिर से मन के दीप जलाओ

- वेदव्यास -

(1)
फिर से मन के दीप जलाओ
विश्ववासों के शब्द जगाओ
छोटे-छोटे अंधियारों में
खुशियों के संसार सजाओ।
(2)
जीवन के सूने आंगन में
स्मृतियों की जोत जलाओ
बहुत समय हलचल में बीता
अब कुछ देर सहज हो जाओ।
(3)
बीता समय नहीं आता है
सपनों के सुरताल बजाओ

सुबह शाम के सन्नाटों में
आशा का उन्माद जगाओ।
(4)
सब कुछ भीतर छिपा हुआ है
मत बांधों कुछ बाहर आओ
सांसों के इस शीशमहल में
हंसो-हंसाओ झूमो गाओ।
(5)
फिर से मन के दीप जलाओ
रचना के संसार सजाओ
दुख के सपनों को बिसराओ
सुख का समय बधाई गाओ।

खेल-खेल में सृष्टि का विकास और वैभव (3)

- डॉ. पूरन सहगल -

(17) कुकडूकूं :

यह भी घेरे का खेल है। घेरे में एक खिलाड़ी मुर्गा बनता है। वह एक साथी मुर्गा चुनता है। दोनों मुर्गे घेरे के खिलाड़ियों को

खींचकर अपना दल बढ़ाते हैं। घेरे के खिलाड़ी भीतर के खिलाड़ियों को बाहर खींचकर अपना दल बढ़ाते हैं। जिनकी संख्या बढ़ जाती है, वह दल विजेता घोषित होता है। बाहर से घोष होता है- 'मुर्गा बोले कुकडूकूँ।' भीतर से उत्तर आता है- मुर्गा किसका? बाहर से आवाज आती है- मुर्गा राम का। इसी घोष के साथ मुर्गों में खेंच-तान शुरू हो जाती है। इसी क्रम में कुछ खेल ऐसे भी हैं, जो पर्व-त्योहार पर खेलने में अधिक दिखते हैं।

(18) साख पिछाणी :

साख अर्थात् फसल, पिछाणी अर्थात् पहचान। खिलाड़ी बालक-बालिकाएँ एक स्थान पर बैठ जाते हैं। बहुधा घेरे में, दाम देने वाला खिलाड़ी खड़ा होता है। उसे गाँव के किसी किसान का नाम बताकर पूछा जाता है- 'कई-कई वायो, कतरो रकवो दिसा निसाणी।' फलां किसान ने खेत में कौन-कौन सी फसलें बोई हैं। उसके खेत का रकवा (लम्बाई-चौड़ाई - बीघा आदि) कितना है? खेत कहाँ स्थित है। जो नहीं बता पाता, उसे पास वाला सात घुम्में पीठ पर लगाता है।

(19) हमचो :

हमचो का अर्थ है समाचार। खिलाड़ी प्रतिभागियों की एक लम्बी कतार बनाई जाती है। मुखिया, नम्बर एक खिलाड़ी को कोई

समाचार कान में कहता है। पहला प्रतिभागी दूसरे को - इस प्रकार वह समाचार कानोकान अंतिम प्रतिभागी तक पहुँचता है। अंतिम प्रतिभागी समाचार को मुखिया के पास आकर कहता है। यदि वह समाचार वैसा का वैसा नहीं होता, जैसा प्रथम प्रतिभागी को दिया गया था, तब मुखिया सबको एक क्रम से बुलाकर समाचार सुनाता है। जिस खिलाड़ी ने समाचार बदला था, उसे मैदान का चक्कर (जितने मुखिया तय करे) लगाना होता है। यह खेल स्मृति की प्रौढ़ता तय करता है। पूर्वकाल में इसका बहुत महत्त्व था। आज भी है। शारीरिक अभ्यास के अतिरिक्त मानसिक अभ्यास के भी अनेक खेल हैं।

(20) आती-पाती :

यह खेल कहीं भी एक स्थान पर बैठकर खेला जा सकता है। सब लड़के मिलकर अनेक वृक्षों की पत्तियाँ एक टोकरे में एकत्र कर लेते हैं। फिर बारी-बारी से दाम देते हैं। दाम वाले लड़के को किसी

विशेष वृक्ष की पत्ती खोजने के लिए कहा जाता है। वह टोकरे में एक अभीष्ट पत्ती खोजता है। तब उससे उस पत्ती के गुण-दोष पूछे जाते हैं। यदि वह बता देता है, तब उससे यह पूछा जाता है कि फलां वृक्ष गाँव में या गाँव की निर्धारित दिशा या सीमा में कहाँ-कहाँ है। इस खेल से वृक्षों की पहचान व उनके उपयोग की जानकारी के साथ-साथ उनकी उपस्थिति भी पता रहती है। ऐसा एक खेल गाँव की फसलों को जानने का भी होता है ।

(21) कबड्डी :

यह खेल आज विश्वस्तरीय लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। इसकी खेल प्रक्रिया तथा नियम बताना आवश्यक नहीं हैं। इस खेल से जहाँ शारीरिक क्षमता में वृद्धि होती है। वहीं प्रतिद्वंद्वी के प्रति सतर्कता बनाए रखने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। पाले के प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों के चक्रव्यूह में घुसकर उन्हें ललकार लगाकर

पाले की सीमारेखा से बाहर खदेड़ने का साहस तथा फिर नाबाद होकर तथा पाले के खिलाड़ियों को छूकर पुनः अपने पाले में लौट आने की साहसपूर्ण चतुराई देखते ही बनती है। केवल धावक ही नहीं, उस पाले के खिलाड़ियों द्वारा किया गया धावक का घेराव। स्वयं की रक्षा करते हुए अनेक दाँव-पेंच लगाकर पकड़ में दबा लेना, दर्शकों तक के साँसों को ऊपर-नीचे करता रहता है।

अद्‌भुत है यह कबड्डी खेल। बात यहीं नहीं थम जाती। धावक द्वारा 'कबड्डी-कबड्डी' की रट लगाते हुए सांस टूटने से पहले नाबाद अपने पाले में लौट आना और प्रतिद्वंद्वी पाले के एक-दो या अधिक खिलाड़ियों को आउट कर आना, धावक के लिए वाह-वाह का हर्षनाद गुंजा देने के लिए दर्शकों को विवश कर देता है। कबड्डी खेल में साँस को संयमित बनाए रखने की क्षमता भी बढ़ती है। यह कबड्डी-कबड्डी की रट एक प्रकार का प्राणायाम ही है। इस खेल को देखकर अनायास अभिमन्यु की याद आ जाती है। यह खेल अब लड़कों और लड़कियों में समान रूप से लोकप्रिय हो चुका है।

(22) कुर्सी दौड़ :

खो जैसे ही तत्परता, फुर्ती और सावधानी का खेल और कुर्सी दोड़ है। कुर्सियों के चारोंओर दौड़ते हुए अपनी कुर्सी सलामत रखने

का खेल रखने का यह खेल बालक-बालिकाओं में अत्यंक लोकप्रिय है। इसी प्रकार एक खेल बहुत पहले प्रचलित था- 'डंडा जीत राजा बन।' कुर्सियों के स्थान पर डंडे रखे जाते थे। सारी प्रक्रिया कुर्सी दौड़ जैसी होती थी। अंत में जिसके पाँव तले डंडा आ जाता था, उसे उस दिन खेल का राजा घोषित करते थे।

(23) लट्टू :

कभी लट्टू सबसे लोकप्रिय सड़क खेल था। यह अभी भी उत्तर भारत के शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में खेला जाता है। लट्टू भारतीय गांवों में बच्चों के लिए जीवन का एक हिस्सा है। लट्टू एक ठोस शलजम आकार वाला लकड़ी का खिलौना है जिसके निचले भाग में एक कील निकली होती है और ऊपर से नीचे की और खांचे बने होते हैं। एक रस्सी को लट्टू के निचले आधे भाग के आसपास लपेटा जाता है जिससे यह स्पिन बना सकता है।

(24) चिड़िया उड़ :

चिड़िया उड़ खेल के लिए छह-सात बच्चों के झुंड एक साथ बैठकर खेलते । खिलाड़ी निर्धारित जगह पर तर्जनी अंगुली रखते। एक खिलाड़ी चिड़िया उड़ समेत अन्य पक्षियों के उड़ने की बात

करता। हर उड़ने वाले पक्षी के नाम पर अंगुली को उठाया जाता। इसी बीच बोलने वाला किसी जानवर या बिना उड़ने वाली किसी वस्तु अथवा सामान का नाम लेता और जो इस पर अंगुली उठा देता है वह खेल से बाहर हो जाता। यह खेल अब भी कहीं-कहीं देखने को मिल जाता है।

(25) राजा मंत्री चोर सिपाही :

चार लोगों में खेले जाने वाले इस इंडोर गेम में कागज की पर्चियों पर राजा, मंत्री , चोर और सिपाही लिखा होता। सभी चारों खिलाड़ियों को एक पर्ची चुननी होती जिसमें मंत्री की पर्ची वाले

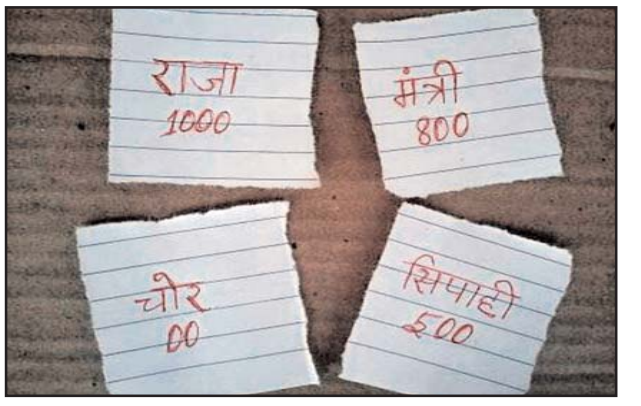

खिलाड़ी को चोर और सिपाही की पर्ची चुनने वाले का पता लगाना होता था। यह खेल अब लुप्तप्राय हो गया है।

(26) पहिया गाड़ी :

जिन बच्चों को साइकिल नहीं मिलती थी वे बेकार पहिया को गाड़ी बनाकर खेलते थे और कम्पटीशन में चलाते थे। उनमें एक

दूसरे से आगे निकलने की होड़ रहती थी। पहिया को हाथ या किसी लकड़ी के फट्टे से लुढ़काते-लुढ़काते न जाने कितनी दूरी तय हो जाती थी, पता ही नहीं चलता था। खेल-खेल में शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है।

- क्रमश

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।